चन्दामामा
जुलाई १९७९

अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष १६७६ के उपलक्ष्य में

chic-modithread

पेश करते हैं अपनी प्रथम

बच्चों के लिए नीडलवर्क प्रतियोगिता

भाग कैसे लें?

प्रतियोगिता प्रवेश पत्र में, ऊपर दिखाए गये हाथी का डिज़ाइन अपने सही आकार में छापा गया है. तुम इस डिज़ाइन या अपने मनपसंद किसी भी डिज़ाइन को कम से कम 12 C.M. X 12 C.M. के आकार में एम्ब्रॉयडरी, बुनाई, क्रोशिया, मैक्रमकाम, जड़ाऊ काम (नक्काशी) या दस्तकारी द्वारा बना सकते हो. कसीदाकारी का काम सिर्फ़ मोदीथ्रेड से ही किया जाना चाहिए. प्रविष्टियों की परख सफ़ाई, खूबसूरती, रंगों के चुनाव और इस्तेमाल किए गये टाँकों के आधार पर की जायगी. हर प्रविष्टि के साथ पूरी तरह भरा हुआ प्रतियोगिता प्रवेश कूपन और इस्तेमाल किए गये मोदीथ्रेड के लेबल होना ज़रूरी है. प्रतियोगिता प्रवेश कूपन और नियम व शर्तों का प्रपत्र मोदी धागों के सभी विक्रेताओं, मोदीधागों की काउन्टर शॉप, मोदीथ्रेड के डिपो और वितरकों तथा शिक पत्रिका के अप्रैल, मई, जून और जुलाई १६७६ के अंकों में मिलेगा.

जीतने के कई अवसर!

सारे देश और प्रतियोगिता को १० क्षेत्रों में बाँटा गया है और हर क्षेत्र के लिए ५४६ पुरस्कार है. हर क्षेत्र की प्रथम पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टि को शानदार राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चुना जायगा. अपनी प्रविष्टि मोदी धागों के अपने क्षेत्र के डिपो में भेजो. डिपो के पते नियम व शर्तों में दिए गये है.

हर क्षेत्र में दो अलग-अलग उम्र के समूहों को अलग-अलग पुरस्कार दिए जाएंगे

उम्र समूह-६ से ११ वर्ष:

Grand National Prize Chic Modithread Scholarship worth Rs. 1000/- and "Needlework Young Princess 1979 Trophy" plus a Childcare hamper of dresses, toys and nursery furniture worth Rs. 1000/-.

Ten 1st Prizes Childcare hampers of dresses, toys and nursery furniture. Each hamper worth Rs. 500/-.

Ten 2nd Prizes Sets of dresses from chic Creations. Each set worth Rs. 200/-.

Ten 3rd Prizes Each worth Rs. 100/-. Gift hampers of Johnson's* Baby Powder, Johnson's* baby soap and Johnson's* baby cream. *Trade Mark

100 Merit Prizes Sets of Children's books from U.S.S.R. Book Centre and Lok Vangmaya Griha (Pvt.) Ltd., Bombay. Each set worth Rs. 20/-.

100 Consolation Prizes S.N.P. FUN-N-COLOUR Painting Kits worth Rs. 17/- each.

उम्र समूह-१२ से १६ वर्ष:

Grand National Prize Chic Modithread Scholarship worth Rs. 1000/- and "Needlework Princess 1979 Trophy" plus a gift cheque from Childcare worth Rs. 1000/-.

Ten 1st Prizes Gift cheques from Childcare Each worth Rs. 500/-.

Ten 2nd Prizes Sets of dresses from chic Creations. Each set worth Rs. 200/-.

Ten 3rd Prizes Each worth Rs. 100/-. Gift hampers of Johnson's* Baby Powder, Johnson's* Complexion Cream and Carefree* Sanitary Napkins. *Trade Mark

100 Merit Prizes Sets of books from U.S.S.R. Book Centre and Lok Vangmaya Griha (Pvt.) Ltd., Bombay. Each set worth Rs. 20/-.

100 Consolation Prizes Chic Needlework Kits worth Rs. 17/- each.

First 500 entries in each of the ten territories will receive a Duraflex Plastic book jacket

शिक शौक पढ़ें – शिक पत्रिका में बच्चों का विशेष भाग! प्रतियोगिता की पूरी जानकारी के लिए लिखें: Chic Publications, Akash Ganga, 89, Bhulabhai Desai Road, Bombay 400026.

जल्दी कीजिए! प्रतियोगिता की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त '७६
अपनी प्रविष्टि अपने क्षेत्र के मोदीथ्रेड डिपो में भेजें।
पते की जानकारी के लिए नियम व शर्तें पढ़ें।

लूटो जेम्स का मज़ा!
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ।
3 6 9 2 5 8 4 ? 10
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : 10-8-1979
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
अपना उत्तर, कॅडबरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पेकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"Fun with Gems", Dept. No. C-8
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra.
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN
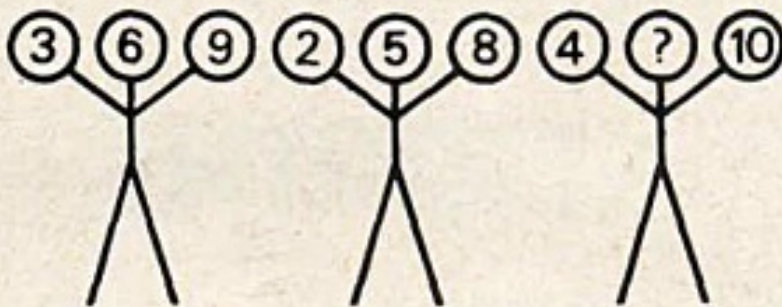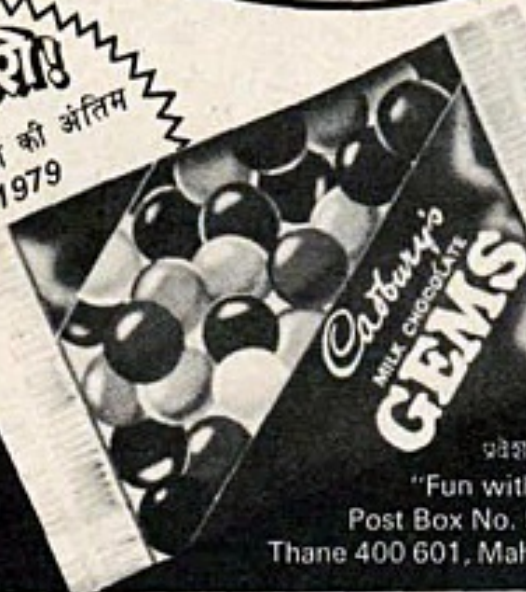
चन्दामामा

जुलाई 1979

विषय-सूची

★

एक प्रति : १-२५

वार्षिक चन्दा : १५-००

सबसे दिलचस्प शौक़ फ़ोटोग्राफ़ी को अब लिबर्टी कैमरा ने कितना सरल, कितना कम ख़र्च बना दिया है...!

नये शौक़ीन हों या कैमरा विशेषज्ञ, स्माइली और लूना कैमरा से फ़ोटोग्राफ़ी का मज़ा तो आता है ही, इनसे फ़ोटो खींचना बड़ा सरल है। ख़र्च भी कम आता है।

- नये शौक़ीनों के लिए आदर्श
- चलाने में आसान
- देखने में आकर्षक
- १२७ रॉल फ़िल्म पर ४ सें.मी. × ४ सें.मी. की १२ तस्वीरें लेता है।

- फ़ोटोग्राफ़ी का असली मज़ा लेने के लिए
- १२० रॉल फ़िल्म पर ६ सें.मी. × ६ सें.मी. की १२ तस्वीरें खींचता हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक फ़्लेशगन भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

उत्पादक:
फ़ोटो इंडिया
९७, सरदार पटेल रोड, सिकन्दराबाद, ५०० ००३

maa HFI/34/78 Hin

आपके बालों को
ज़रूरत है
रीटा द्वारा
देखभाल की
रीटा बालों को सवारने का एक उत्तम साधन है,
जो बहुत ही गाढ़ा और मोहक सुगंधवाला है।
इससे बाल नैसर्गिक रूप से घने बढ़ते हैं
और यह दिमाग को ठंडक पहुंचाता है।
'रीटा' स्त्री व पुरुष दोनों के लिए
श्रेष्ठ तेल है।
रीटा
RITA
RITA
GROWS
LOVELY HAIR
रीटा से बाल सुंदर बढ़ते हैं।
एक शीशी आज ही खरीदिये।
हर जगह मिलता है।
वेटो कंपनी, बम्बई • कलकत्ता • मद्रास
Sona 21 Hi

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "युद्ध की कामना" द्वारा हमें यह बात विदित होती है कि राजा या प्रजा का भी शांति की कामना करना सर्वदा उचित ही है। पर अशांति की हालत में शांति को क़ायम करने के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाता है तो ऐसी हालत में वह युद्ध भी शांति-प्रियता का कारण बनता है।

अमर वाणी

साधोः प्रकोपितस्यापि
मनो नायाति विक्रियाम्
न हितापयितुं शक्यं
समुद्रांभः तृणोल्कया ॥

[साधुओं को हम जितना भी उत्तेजित करे, उनमें विकार पैदा नहीं होता। जैसे घास-पूस जलाकर उस अग्नि से समुद्र जल को गरम करना असंभव है]

वर्ष : ३१ जुलाई १९७९ अंक : ११

एक प्रति : १-२५ : : वार्षिक चन्दा : १५-००

वै. चंद्रशेखर राव, रूरकेला (उडीसा)

प्रश्न : "अगत्स्य" नामक कहानी में आपने लिखा कि इल्वल वातापि नामक व्यक्ति को बकरी के रूप में बदलकर पकाकर अतिथि बने ब्राह्मणों को खिलाया करते थे! तो इसका मतलब हैं कि पुराण युग के ब्राह्मण बकरी का मांस खाया करते थे?

उत्तर : जी हाँ, कहा जाता है कि वैदिक युग के आर्य तेरह प्रकार के जानवरों का यज्ञ पशुओं के रूप में उपयोग हुआ करते थे। उनमें गायें भी थीं। मगर वैदिक युग के समाप्त होने के पूर्व ही गोवध पर निषेध। ब्राह्मणों के द्वारा मांसाहर त्यागने का कारण जैन मत का प्रभाव है। बौद्ध अहिंसावादी हैं, फिर भी उन लोगों ने मांस भक्षण का विसर्जन नहीं किया। कथा सरित्सागर की एक कहानी में बताया गया है कि भूख से परेशान ब्राह्मण युवकों ने गाय का वध करके खाया था।

टी. एल. श्रीनिवास, वारंगल (आन्ध्र)

प्रश्न : रामायण, महाभारत की पुराण गाथाएँ कवियों की कल्पनाएँ हैं या वास्तव में घटी हैं? यदि घटी हैं तो उनमें से पहला काव्य कौन-सा है?

उत्तर : शोधकर्ताओं का कहना है कि रामायण और महाभारत की कथाएँ प्रारंभ में वीर गाथाएँ थीं। इसलिए वे "दंत" कथाओं के रूप में अनेक कल्पनाओं के कारण भूत बनीं, और बाद को उन्हें लिखित रूप प्राप्त हुआ। प्रत्येक रामायण की कथा भिन्न होने तथा महाभारत में मूल कथा से भिन्न अनेक उपाख्यानों के सम्मिलित होने का कारण संभवतः प्रादेशिक दंत पुराण कथाएँ हैं।

पर वीर गाथाएँ पूर्ण रूप से कल्पित नहीं हो सकतीं, उनका आधार कोई न कोई वास्तविक घटना रही होगी। उन्हें रसमय बनाने के हेतु कवि व गायक कल्पनाओं से भर देते हैं। इस कारण कालांतर में वास्तविक घटनाओं से ज्यादा कल्पनाएँ प्रमुख स्थान पाती हैं। रामायण के राम और महाभारत के कृष्ण अवतार पुरुष बन गये। यह नहीं कह सकते कि रामायण से भिन्न कोई रामचन्द्र हुए हों, पर महाभारत से भिन्न कृष्ण (देवकी नंदन वासुदेव) उपनिषदों में वर्णित हैं। इसी प्रकार रामायण में सीताजी के पिता जनक का वर्णन उपनिषदों में है, वे वहाँ पर सीताजी के पिता नहीं, इन विवरणों के आधार पर पुराणों की उत्पत्ति और परिणामों पर कुछ हद तक कल्पना की जा सकती है।

[७२]

विश्वासपात्र नेवला

देवशर्मा नामक एक गरीब ब्राह्मण के घर कई वर्षों के बाद एक पुत्र पैदा हुआ। इस पर वे ब्राह्मण दंपति परमानंदित हुए। चंदन के मलने से देह जैसे शीतल हो जाती है, उससे कहीं अधिक पुत्र का स्पर्श शीतल होता है! लोग पुत्र के वास्ते अपने भाई-बंधु, पिता तथा संरक्षक को भी त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं।

उन ब्राह्मण दंपति के जब कोई संतान न थी, तब वे लोग एक नेवले को पालते थे। वह स्वेच्छापूर्वक सारे घर में घूमा करता था। तब तक अपनी संतान के रूप में देखभाल करनेवाले नेवले को देख अब वह दंपति यह सोचकर डरने लगे कि कहीं वह नेवला अपने पुत्र की कोई हानि न कर बैठे। अपने पुत्र के प्रति उनके मन में जो अपार प्रेम था, वही उनके इस डर का कारण था।

प्रसव के दसवें दिन ब्राह्मणी स्नान करने नदी पर चली गई। जाते वक़्त उसने अपने पति को यह चेतावनी दी– "मैं नहाने जा रही हूँ, आप बड़ी सावधानी से बच्चे की देखभाल कीजिए।"

ब्राह्मणी के चले जाने के बाद रानी की परिचारिका ने आकर बताया–"महारानीजी आप को दक्षिणा देना चाहती हैं, आप खुद जाकर ले लें।"

रानी का यह संदेशा पाकर ब्राह्मण अपने पुत्र तथा घर को नेवले की देखभाल में छोड़ उसी वक़्त राजमहल की ओर चला गया।

ब्राह्मण के चले जाने के थोड़ी देर बाद दीवार की दरार में से एक साँप शिशु की

ओर तेजी से बढ़ा। सहज शत्रुता के कारण नेवले ने साँप का सामना किया और उसे मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

इतने में नेवले ने ब्राह्मण को घर लौटते देखा। अपनी विजय पर प्रसन्न होते देख नेवला रक्तसिक्त मुँह को लेकर ब्राह्मण के सामने गया। ब्राह्मण ने नेवले के मुँह पर खून देख सोचा कि नेवले ने अपने शिशु को मार डाला होगा। यों विचार कर आगे-पीछे सोचे बिना उसने नेवले पर लाठी चलाकर उसे मार डाला।

मगर ब्राह्मण ने घर में प्रवेश करके सोनेवाले अपने शिशु तथा साँप के टुकड़ों को देखा।

"उफ़! मैंने कैसा अनर्थ कर डाला है! पापी हूँ। मेरे पुत्र की रक्षा करनेवाले नेवले को मैंने अपने ही हाथों से मार डाला है!" यों चिंता करते अपने दुख पर नियंत्रण न कर पाने की हालत में फ़र्श पर गिरकर सर पीटते लोटने लगा।

उस वक़्त नदी से लौटकर ब्राह्मणी ने इसका कारण पूछा। ब्राह्मण ने सारा वृत्तांत उसे सुनाया। इस पर ब्राह्मणी ने समझाया–"प्रलोभन में पड़कर तुमने बच्चे की देखभाल करने में असावधानी दिखाई, जिसका फल यह हुआ कि हमारे बच्चे की जान बचानेवाले निरीह प्राणी की अकारण मृत्यु हो गई। आशा या कामना तो हो सकती है, पर प्रलोभन के वशीभूत नहीं होना है। प्रलोभी के सर पर ललाट का चक्र तो नहीं घूम रहा है?"

"वह कैसी कहानी है?" ब्राह्मण के पूछने पर उसकी पत्नी ने यों बताया :

प्रलोभी

एक गाँव में अल्पलोभी, मितलोभी, अतिलोभी और अत्यंतलोभी नामक चार ब्राह्मण युवक रहा करते थे। उनके बीच गहरी दोस्ती थी। सब लोग गरीबी के शिकार थे। एक दिन जब चारों युवक एक जगह इकट्ठे हुए, तब अत्यंत लोभी ने बाक़ी लोगों से यों बताया :

"दोस्तो, गरीबी से बढ़कर अपमान की बात कोई दूसरी नहीं है। भाई-बंधु और रिश्तेदारों के बीच दरिद्रता की ज़िंदगी बिताने के बदले खूंख्वार जानवरोंवाले घने जंगलों में कंटीली झाड़ियों के बीच निवास करना कहीं उत्तम है! अत्यंत विश्वासपात्र नौकर के साथ भी उसका मालिक तिरस्कार पूर्ण व्यवहार करता है। अन्यत्र सज्जन माने जानेवाले रिश्तेदार भी गरीब व्यक्ति के प्रति निर्दयतापूर्ण व्यवहार करते हैं। उनके उत्तम गुणों का कोई मूल्य ही नहीं होता। उनके पुत्र तक उनका परित्याग करते हैं। पत्नियाँ तो उनकी परवाह ही नहीं करतीं। दोस्त उनकी ओर आँख तक उठाकर नहीं देखते। इस दुनिया का व्यवहार ही कुछ ऐसा है कि साहस, सौंदर्य, वाक्‌चातुरी, चमत्कार, ज्ञान, विद्या, युद्ध-कौशल इत्यादि अनेक उत्तम गुणों के होने पर भी थोड़ी-बहुत संपत्ति के न होने से मानव की प्रतिश्ठा नहीं होती। धन हो तो ऐसे गुणों के द्वारा दुनिया को जीता जा सकता है। उसके बिना ये सब व्यर्थ हैं। इसलिए हम लोग देशाटन करके कमायेंगे।"

बाक़ी मित्रों ने उसके कथन का समर्थन किया, तब चारों दोस्त अपने गाँव को छोड़ धन कमाने चल पड़े। एक जून तक अपना पेट न भर सकनेवाला व्यक्ति अपने

बंधु-बांधव, माता और जन्मभूमि को छोड़ देशाटन न करे तो क्या कर सकता है?

थोड़े ही दिनों में वे लोग अवंती राज्य में पहुँचे। सिप्री नदी में स्नान करके नदी के तट पर निर्मित मंदिर में उन लोगों ने महाकाल (शिवजी) के दर्शन किये। मंदिर से जब बाहर निकले, तब भैरवानंद नामक एक तांत्रिक सन्यासी से उनकी मुलाक़ात हुई। सब ने उस सन्यासी को प्रणाम किया और उनके पीछे समीप के उनके मठ में चले गये।

सन्यासी ने पूछा—"तुम लोग कौन हो? कहाँ से आते हो? कहाँ जाना चाहते हो?"

"हम लोग धन की खोज में चल पड़े हैं!

इस प्रयत्न में हम मरने को तैयार हैं, मगर अपनी यह खोज बंद करनेवाले नहीं हैं। हमने सुना है कि मंत्र के बल पर भूगर्भ में गड़े खजाने को पाकर धनी बन सकते हैं। ऐसे एक मंत्रवेत्ता के आश्रय में जाना हमारा आशय है। साहसी व्यक्ति के लिए असाध्य वस्तुएँ भी साध्य बन जाती हैं। एक व्यक्ति आकाश से गिरकर अधो लोक में जाता है। दूसरा नरक से निकलकर सप्त समुद्रों पर शासन करता है। पतन और उत्थान का कारण प्रारब्ध नहीं है, प्रयत्न का अभाव है। परिश्रम का बल और मानव के प्रयत्न का फल अनायास ही हाथ लगने की स्थिति को क़िस्मत कहते हैं। पर साहसी अधिकार की परवाह नहीं करते। अपने प्राणों के प्रति मोह नहीं रखते। उनका दुस्साहस अत्यंत उदात्त होता है। इस संसार में अत्यंत परिश्रम करने के बावजूद भी कोई सुख प्राप्त नहीं होता। नारायण ने लक्ष्मी को प्राप्त करने के लिए समुद्र का मंथन किया। मंथन करते-करते उनके हाथों में छाले पड़ गये। जो व्यक्ति श्रम नहीं करता, उसकी संपत्ति घटती जाती है। बिना पराक्रमवाला राजा अन्य राजाओं को जीत नहीं सकता। यहाँ तक कि वह अपने राज्य को भी बचा नहीं सकता। खजाना भूगर्भ के तहखानों में हो, नागों के संरक्षण में हो, या पिशाचों को संतुष्ट करने से प्राप्त होता हो, अथवा प्रेतों की भूमि में लाशों के माँस को भूतों को बेचने पर हाथ लगता हो, या बुझानेवाली जादू की बत्तियों द्वारा खजाना सूचित होता हो, हम उसे प्राप्त करने के लिए सब तरह के कष्ट झेलने के लिए तैयार हैं। आप को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि आप कुछ अतींद्रिय शक्तियाँ रखते हैं। आप हमारी मदद कर सकते हैं, हमारी मदद करनी ही होगी। बड़े कार्य बड़े व्यक्तियों के द्वारा ही संपन्न होते हैं। बड़वानल को समुद्र ही अपने भीतर छिपा सकता है।" यों चारों मित्रों ने कहा।

भल्लूक मांत्रिक

[१२]

[राजा दुर्मुख के दुर्ग पर अधिकार करनेवाले सामंत ने बधिक भल्लूक आदि पर अपने सैनिकों को उकसाया। डाकू नागमल्ल ने सेनापति को बताया कि वह राजा दुर्मुख को बंदी बनाकर ले आया है। इस पर सामंत बधिक भल्लूक के पास आया। राजा दुर्मुख क्रोध में आकर सामंत राजा पर टूट पड़ा। सामंत भागने लगा। बाद...]

सामंत भूपति ने अपने घोड़े को रोका। अपना पीछा करनेवाले राजा दुर्मुख का सामना करने का प्रयत्न किये बिना क़िले के खुले द्वारों की ओर घोड़े को दौड़ाने लगा। सेनापति ने देखा कि उसका राजा अपने शत्रु को देख भाग रहा है, उसने भी अपने सैनिकों को लौटने की चेतावनी दे घोड़े को क़िले की ओर मोड़ दिया।

सेनापति जब यों भागने का प्रयत्न करने लगा, तब उसके पीछे स्थित दो साहसी सैनिक उससे बोले—"मालिक! हम पर हमला करनेवाले सैनिकों की संख्या दस से ज्यादा नहीं है। इसलिए हम नये व पुराने राजा को आपस में लड़कर मरने देंगे। इस बीच हम इन थोड़े से सैनिकों को घेरकर इनका अंत कर सकते हैं। इसके बाद हमारा सामना करने के लिए

कोई बचा न रहेगा, तब आप ही खुद उदयगिरि के राजा बन सकते हैं।"

सैनिकों के मुंह से ये बातें सुनने पर सामंत राजा के सेनापति के मन में राज्य का लोभ पैदा हुआ। उसने अपने घोड़े को घुमाकर हाथी पर सवार बधिक भल्लूक आदि की ओर देखा। बधिक भल्लूक ने परसा उठाकर डाकू नागमल्ल, उसके अनुचर तथा दुर्मुख के अंग रक्षकों को चेतावनी देकर उच्च स्वर में कहा—"सुनो, दुस्साहस करके राजा दुर्मुख अपने राज्य के साथ अपने प्राणों को भी खोने जा रहा है। हमारी सहायता के बिना इतने सारे शत्रुओं के बीच अकेले ही जाकर वह अपनी जान गँवाने जा रहा है। अब हमारे सामने जो भी शत्रु आया, उसे काटते जायेंगे, तभी जाकर हम लोग राजा दुर्मुख को बचा सकते हैं।"

ये बातें सुन राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाले गदे को ऊपर उठाकर भयंकर रूप से गरज उठा—"अबे सामंत सूर्य भूपति के सैनिको, सावधान! राजा दुर्मुख की तुम लोगों ने कोई हानि पहुँचा दी तो याद रखो, मैं इसी वक़्त तुम सब को टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।" यों चेतावनी देकर वह क़िले की ओर चल पड़ा।

उग्रदण्ड के रवाना होते ही राजा बनने का सपना देखनेवाला सेनापति झट से अपने घोड़े को घुमाकर अपने सैनिकों से बोला—"सुनो, हम लोग राक्षस और परसु धारण किये हुए बधिक भल्लूक का सामना कर किसी भी हालत में अपने प्राण बचा नहीं सकते। क़िले की दीवारें ही हमारी रक्षा कर सकती हैं। क़िले में घुसते ही हम उसके दर्वाजे बंद कर देंगे।" यों कहकर वह बेतहाशा अंधाधुंध भागने लगा।

सेनापति को क़िले की ओर भागते देख बहुत सारे सैनिकों ने उसका अनुसरण किया। बधिक भल्लूक सूंड कटे हाथी के कुंभ स्थल पर सवार जंगली व्यक्ति से बोला—"अबे, मेरे प्यारे जंगली सेवक!

तुम अपनी आदत के मुताबिक़ जैसे चिड़ियों पर तीर चलाते हो, वैसे भागनेवाले सैनिकों पर भी बाण चलाकर उन्हें मत मारो। हम लोग राज्य खोये हुए दुर्मुख राजा को थोड़े क्षण के लिए ही सही सिंहासन पर बिठायेंगे। तब उसका सर ले जाकर भल्लूक मांत्रिक को सौंप देंगे। नाहक़ खून-खराबी क्यों?"

इसके बाद हाथी पर सवार बधिक भल्लूक, डाकू नागमल्ल, दुर्मुख के अंग रक्षक भी राक्षस उग्रदण्ड के पीछे अपने वाहनों को दौड़ाते क़िले के द्वार तक पहुँच ही गये थे कि इस बीच सामंत राजा अपने थोड़े सैनिकों के साथ क़िले के भीतर पहुँचा और झट से उसने क़िले के दर्वाजे बंद करवा दिये। थोड़ी देर बाद पीछे से सामंत राजा के जो सैनिक आये, वे अपने प्राणों के डर से क़िले के बाहर हाहाकार मचाते क़िले की दीवारों की ओट में तितर-बितर हो भाग गये।

राक्षस उग्रदण्ड ने सब से पहले क़िले के दर्वाजों तक पहुँचकर उन पर ज़ोर से अपने पत्थरवाले गदे का प्रहार किया। पर उसका कोई असर न होते देख वह चकित हो बधिक भल्लूक से बोला—"बधिक भल्लूक! सामंत का यह सेनापति जैसा कायर है, वैसे चतुर भी मालूम होता

है। अब हम लोग क्या करें? राजा दुर्मुख क़िले के अन्दर अकेले अपने दुश्मनों के बीच फँस गया है। उसके प्राणों की तो मुझे कोई चिंता नहीं है, मगर मेरी चिंता तो वास्तव में इस बात की है कि तुम उसका सिर भल्लूक मांत्रिक को कैसे सौंप सकते हो?"

राक्षस उग्रदण्ड के मुँह से ये शब्द सुनकर बधिक भल्लूक एक बार आपाद मस्तक कांप उठा। क्योंकि अगर वह राजा दुर्मुख का सर काटकर न ले जायगा तो उसे ज़िंदगी-भर भल्लूक मांत्रिक भल्लूक के रूप में ही छोड़ देगा। मानव का जन्म धारण कर मानव की ज़िंदगी कई साल

तक जीकर आखिर उसे भल्लूक के रूप में जंगलों में किन्हीं शहद की मक्खियों के छत्तों को खाते हुए जीना होगा, इससे बढ़कर उसकी ज़िंदगी के लिए कौन सबसे बड़ा अभिशाप हो सकता है?

यों विचार कर बधिक भल्लूक ने किसी भी तरह से राजा दुर्मुख के प्राण बचाने का अपने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया, तब परसा उठाकर चिल्ला उठा–'हे मेरे सिरस भैरव!' तब दुर्ग के दर्वाजों पर अपनी सारी ताक़त लगाकर प्रहार किया। दुर्ग के दर्वाजे मज़बूत थे, जिन पर लोहे की भारी परत चढ़ी थी, जिससे दर्वाजों पर उस वार का कोई प्रभाव न पड़ा, साथ ही बधिक भल्लूक के हाथ का परसु उछलकर दूर जा गिरा।

हाथी पर आगे बैठा हुआ जंगली युवक उछलकर नीचे कूद पड़ा, दौड़कर परसु को अपनी हाथ में ले चिल्ला उठा–"मालिक! नाहक़ जोश में आकर भल्लूक मांत्रिक के जादूवाले परसु को मत तोड़ो। अगर हमें क़िले के भीतर घुसना ही है तो इन बंद दर्वाजों को जलाकर राख कर देना ही एक मात्र उपाय है।"

"अरे जंगली सेवक! तुम्हारी सलाह तो बड़ी अच्छी सूझ-बूझ से भरी हुई है! मगर इस बीच सामंत सूर्य भूपति राजा दुर्मुख का वध कर बैठे तो मेरी हालत क्या होगी? क्या तुमने यह भी सोचा?" बधिक भल्लूक ने गुस्से में आकर कहा।

"हाँ, यह बात तो सच है।" यों कहते राक्षस उग्रदण्ड पत्थरवाला गदा ऊपर उठाकर चार-पाँच क़दम पीछे हटा। फिर उछलते जाकर क़िले के द्वारों पर जोर से प्रहार किया।

राक्षस के मजबूत गदा के प्रहार से दर्वाजे तो टूटे नहीं, लेकिन क़िले की दरारोंवाली दीवार का थोड़ा हिस्सा टूट गया, दीवार के पत्थर सब धम्म से नीचे गिरे। राक्षस उग्रदण्ड, बधिक भल्लूक आदि इस डर से कि कहीं पूरी दीवार

टूटकर उन पर गिर न जाय, वे दूर भाग गये, तब सबने सर उठाकर देखा ।

उस वक़्त क़िले की दीवार पर एक दृश्य को देख सब लोग विस्मय के साथ एक दम डर भी गये। काली पोशाक पहनी एक बड़े बंदर की आकृति दीवार पर बैठी थी। उसके हाथ में एक लंबा मंत्र दण्ड था। उसकी मूठ पर एक ही हीरे में खचित भालू का सिर सूरज की रोशनी में चमक रहा था।

बंदर की उस आकृति को तथा उसके हाथ में स्थित मंत्र दण्ड को देख बधिक भल्लूक ने ज़ोर से दांत किटकिटाये, तब उच्च स्वर में बोला–"अबे, बंदर की आकृति में दीखनेवाले बच्चे, तुम सचमुच बंदर हो या कोई पिशाच हो? महान शक्तिशाली भल्लूक मांत्रिक का मंत्रदण्ड तुम्हारे हाथ में कैसे आ गया? जल्दी-जल्दी सच्ची बात बताओ, वरना..."

यह सवाल सुनकर बंदर कर्कश स्वर में चीख उठा, तब उसने पूछा–"अबे भल्लूक रूपधारी, तुम सचमुच भालू हो या कोई पिशाच हो?"

इस पर बधिक भल्लूक क्रोध में आया और अपना परसु उस पर फेंकने को हुआ, तब राक्षस उग्रदण्ड ने उसे रुकने का आदेश देकर धीमी आवाज़ में समझाया–"बधिक भल्लूक! तुम जल्दबाजी में आकर यह अनर्थ न कर बैठो। मेरा संदेह है कि तुम जिस भल्लूक मांत्रिक की बात बताते हो, वह किसी ख़तरे में फंस गया है। पहले हम इस पिशाच बंदर के द्वारा पता लगायेंगे कि आखिर उस पर क्या बीता है?"

उग्रदण्ड की बात पूरी होने के पहले ही जंगली युवक ने आड़ में से निशाना लगाकर जो बाण छोड़ा, वह सर्र से पिशाच बंदर की ओर चला गया। बंदर इस बार 'किचकिच' करते हँस पड़ा, अपनी जगह से हिले बिना बाण को अपने बायें हाथ से मरोड़कर पकड़ लिया, अपने

दायें हाथ का मंत्र दण्ड ऊपर उठाकर बोला–"अरे मूर्खों, तुम लोगों को मेरी ताक़त का पता चल गया है। जानते हो, मैं माया मर्कट हूँ?"

बधिक भल्लूक अपने हाथों से एक साथ दोनों कान बंद करके राक्षस उग्रदण्ड से बोला–"उग्रदण्ड! अब इस कमबख्त मर्कट के साथ बात करने से कोई प्रयोजन नहीं है। क़िले के भीतर अभी तक राजा दुर्मुख ज़िंदा है या सामंत के हाथों में मर गया है, पता नहीं चलता है। अगर हम क़िले के दर्वाजे तोड़ न पाये तो कम से कम हमें दीवार फांदकर भीतर जाना होगा। इसका उपाय क्या है?"

उग्रदण्ड विस्मय का अभिनय करते बधिक भल्लूक को देख बोला–"बधिक भल्लूक! लगता है कि तुम अभी तक वास्तविक बात समझ न पाये! अपने को माया मर्कट बतानेवाला यह दुष्ट अगर भल्लूक मांत्रिक का मंत्र दण्ड पा सका है तो निश्चय ही अब तक मांत्रिक अपने प्राण खो बैठा होगा! ऐसी हालत में तुम क्यों राजा दुर्मुख के वास्ते अनावश्यक मुसीबत में फँस जाना चाहते हो? चलो, हम जंगल के किसी पहाड़ी प्रदेश में जाकर अपना समय बितायेंगे।"

"बधिक भल्लूक प्रभू! राक्षस उग्रदण्ड महाशय की सलाह तारीफ़ के क़ाबिल है!" यों कहते डाकू नागमल्ल हाथी पर से नीचे कूद पड़ा, अपने दोनों अनुचरों और अंग रक्षकों को भी हाथी पर से नीचे उतर जाने की सलाह दे बोला–"बताओ, राक्षस उग्रदण्ड महाशय की सलाह कैसी है? हम सब लोग जंगल में एक दल बांधकर रहें तो हमें जंगलों में राहगीरों को लूटते देख रोकनेवाला इस दुनिया भर में कोई न होगा!"

बधिक भल्लूक की आँखें क्रोध के मारे लाल हो उठीं, वह बोला–"अरे जंगली सेवक! यह डाकू नागमल्ल भागकर कहीं न जाये, तुम अपने तीर का निशाना

बना लो।" फिर बाक़ी लोगों से बोला–"मैं भल्लूक मांत्रिक तथा महान साहसी कालीवर्मा नामक युवक की खोज करना चाहता हूँ। तुम लोगों में से जो मेरे साथ चलने को तैयार हो, वे हाथ उठाये!"

राक्षस उग्रदण्ड को छोड़ बाक़ी सब ने स्वीकृतिसूचक अपने हाथ उठाये। जंगली ने शंका भरी आवाज़ में पूछा–"भल्लूक साहब! यह डाकू नागमल्ल और इसके अनुचर हमारे साथ चलने की स्वीकृति दे रहे हैं। मगर हम इन पर कैसे यक़ीन करें?"

"अगर उन पर विश्वास करना खतरे से खाली नहीं है तो यहीं पर उनके सर काट डालूंगा। उग्रदण्ड! तुम्हारा क्या निर्णय है? तुमने पहले बताया था कि भल्लूक मांत्रिक महाराज से तुम्हारा अपना कोई काम भी है?" बधिक भल्लूक ने पूछा।

"अगर वह मांत्रिक ज़िंदा हो, तभी तो मेरा काम बनेगा।" उग्रदण्ड ने उत्तर दिया।

इस बीच माया मर्कट दीवार पर से जोर से चिल्लाकर बोला–"ओह! इस क़िले में लड़ाई हो रही है? या आँख मिचौनी? सैनिक सब दो भागों में बंट गये, कुछ लोग पुराने राजा दुर्मुख को जिलाना चाहते हैं तो कुछ लोग सामंत
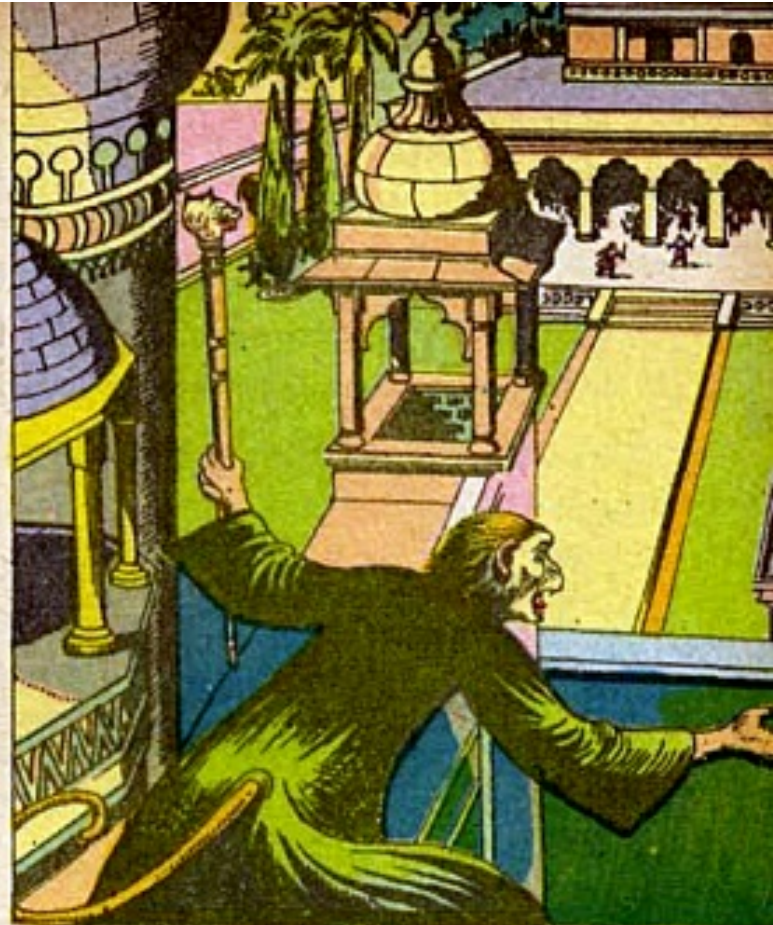
राजा सूर्य भूपति को। ये कमबख्त कायर आमने-सामने खड़े हो युद्ध किये बिना खंभों की आड़ में ताक लगाकर एक दूसरे को उकसा रहे हैं।"

ये बातें सुन बधिक भल्लूक थोड़ा आश्वस्त हुआ, तब बोला–"उग्रदण्ड! अब लगता है कि राजा दुर्मुख के प्राणों के साथ मेरे हाथों में पड़ने की संभावना है। इस भल्लूक की आकृति से मुझे जल्द ही मुक्ति मिलनेवाली है।"

राक्षस उग्रदण्ड खीझ उठा, अपने पत्थरवाले गदे को जमीन पर दे मारा, तब बोला–"अबे बधिक भल्लूक! तुम अभी तक अपना पुराना राग आलापते हो।

क्या भल्लूक मांत्रिक के प्राणों के साथ रहते उसके मंत्र दण्ड को कोई छीन सकता है?" फिर तालियाँ बजाकर माया मर्कट को पुकारा, उससे पूछा–"अबे मर्कट! तुम भल्लूक मांत्रिक के मंत्र दण्ड को अपने साथ लाये हो, यह तो बड़ा ही अच्छा रहा। पर तुमने उसका शव कहाँ पर डाल दिया?"

"मैंने उसके शव को काटकर कौओं और चीलों को आहार बना डाला, मगर उन पक्षियों के शव के निकट आने से रोकते हुए कालीवर्मा उसका पहरा दे रहा है।" यों कहकर मर्कट ने मंत्र दण्ड को दीवार पर टिका दिया, उस पर चढ़कर दूर तक नज़र दौड़ाकर बोला–"अरे, वह भल्लूक मांत्रिक किसी संजीवनी विद्या के सहारे फिर से ज़िंदा हो उठा है। वह एक भैंसे पर सवार है और बगल में एक घोड़े पर सवार हो कालीवर्मा दोनों इधर ही आ रहे हैं। उनको बन्दी बनाने के लिए चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु का मंत्री सेना के साथ उनका पीछा कर रहा है। उन दोनों का शिरच्छेद अपनी आँखों से देखकर ही मैं यहाँ से हिलूँगा, तब तक नहीं।"

माया मर्कट के मुँह से ये बातें सुन बधिक भल्लूक चिल्ला उठा–"हे सिरस भैरव!" फिर बोला–"अबे कमबख्त बंदर! तुम यह बकते क्या हो? तुम कहीं बावरे हो गये हो या हमें पागल बना देना चाहते हो?"

बधिक भल्लूक की बात पूरी भी न हो पाई थी, तेजी के साथ आगे-आगे घोड़े पर कालीवर्मा तथा पीछे भैंसे पर भल्लूक मांत्रिक वहाँ पहुँचे। दुर्ग की दीवार पर खड़े माया मर्कट को देख बोले–"बधिक भल्लूक! मंत्र दण्ड को चुरानेवाले इस माया मर्कट को प्राणों के साथ छोड़ना नहीं चाहिए।"

दूसरे ही क्षण मर्कट किचकिच करते हँस पड़ा और छलांग मारकर क़िले के भीतर कूद पड़ा। (और है)

शांतिप्रेमी

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–" राजन ! आप की लगन पर मैं चकित हूँ। फिर भी मैं समझ नहीं पाता हूँ कि आप दृढ़ प्रतिज्ञ हैं या नहीं ! क्योंकि मानवों की प्रकृति को लेकर एक निर्णय पर पहुँचना कठिन है। इसके उदाहरण स्वरूप मैं आप को श्रीकेतु की कहानी सुनाता हूँ; श्रम को भुलाने के लिए सुनिये।"

बेताल यों सुनाने लगा : प्राचीन काल में श्रीकेतु विक्रमपुर नामक एक छोटे-से देश पर शासन करते थे। विक्रमपुर के राजा अनेक वर्षों से विदर्भ राज्य के सामंत थे। वे विदर्भ राजा को वार्षिक शुल्क चुकाया करते थे। श्रीकेतु अपने बाप-दादों से कहीं बड़ा योद्धा था।

बेताल कथाएँ

पराक्रम में विदर्भ राजा उसकी तुलना नहीं कर सकता था। इसलिए श्रीकेतु के सलाहकारों ने उसे सुझाव दिया कि वह विदर्भ राजा के साथ युद्ध करके विक्रमपुर को एक स्वतंत्र राज्य बनावे। पर श्रीकेतु ने इसे नहीं माना। क्योंकि वह शांति-प्रिय था और युद्ध से वह घृणा करता था।

इसलिए श्रीकेतु ने उन्हें समझाया– "हमारे देश के लिए अभी कमी ही क्या है? वार्षिक शुल्क लेकर विदर्भ राजा शत्रु-भय से हमारी रक्षा करते हैं। यदि हमारा राज्य एक बार स्वतंत्र हो गया तो हमें विदर्भ के साथ ही नहीं, अन्य पड़ोसी राज्यों के साथ भी युद्ध करना पड़ेगा और जिससे हमारी प्रजा कई यातनाओं का शिकार हो जाएगी।"

"महाराज! आप ऐसा न कहिएगा। पराधीनता की अपेक्षा स्वतंत्रतापूर्वक जीना कहीं ज्यादा प्रतिष्ठा की बात होती है न?" सलाहकारों ने कहा।

"पराधीनता मुझ अकेले के लिए ही है न? इस वास्ते युद्ध में कई हजार लोगों के प्राणों की बलि देना मुझे पसंद नहीं है। मुझे इस बात का भरोसा नहीं है कि हमारे राज्य के स्वतंत्र हो जाने पर हमारी प्रजा इससे कहीं ज्यादा सुखपूर्वक जीयेगी। उल्टे वे अनेक युद्धों के शिकार हो सकते हैं।" राजा ने समझाया।

राजा की इस शांति प्रियता की सलाहकारों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

उन दिनों में विदर्भ देश में भयंकर अकाल पढ़ा। वहाँ की जनता में अराजकता फैल गई। यह खबर भी पहुँची कि विदर्भ देश के लोग भूख से तड़पकर समीपवर्ती राज्यों पर हमला कर रहे हैं।

श्रीकेतु ने एक दिन अचानक अपने मंत्री, सेनापति और सलाहकारों को बुलवा कर कहा—"आप लोग दो दिन के अंदर हमारी सारी सेनाओं को युद्ध के लिए तैयार रखिये। हमें भारी पैमाने पर विदर्भ देश पर हमला करना होगा।"

अचानक राजा के मुँह से ये बातें सुनकर कोई विश्वास न कर पाया। क्योंकि ऐसे शांति प्रेमी के मन में युद्ध की कामना और विजयाकांक्षा अचानक कैसे पैदा हो गई? तिस पर भी जब शत्रु विपदा में फंसा हुआ है, उस पर हमला करने की दुर्बुद्धि श्रीकेतु जैसे सज्जन के मन में कैसे और क्यों पैदा हुई?

श्रीकेतु ने खीझकर कहा—"अब एक पल भी देरी करने की गुंजाइश नहीं है। सेना को तुरंत तैयार कीजिए।"

फिर क्या था, दूसरे ही दिन विक्रमपुरी की सेनाएँ विदर्भ राज्य पर टूट पड़ीं।

विदर्भ के राजा और सेनाएँ भी युद्ध में ठहरने की स्थिति में न थीं, इस कारण बड़ी आसानी से श्रीकेतु को विजय प्राप्त हुई। विदर्भ राजा के रूप में राज्याभिषेक होने के पश्चात श्रीकेतु ने यह रहस्य जान लिया कि पराजित होनेवाले विदर्भ के

राजा ने अकाल का सामना करने के लिए जनता के वास्ते आवश्यक धान का संग्रह कर नहीं रखा था। तालाबों में पानी जमा कर रखने की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया था। श्रीकेतु ने इन अभावों की पूर्ति की और विदर्भ के शासकों में यशस्वी राजा के रूप में लोकप्रिय भी बना।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन, श्रीकेतु की शांतिप्रियता और युद्ध के प्रति विमुखता क्या कोई स्वांग ही था? विदर्भ देश जब असहाय स्थिति में था, तब श्रीकेतु का उस पर हमला करने का विचार देखने से ऐसा मालूम होता है कि इसके पूर्व उसके द्वारा ऐसा प्रयत्न न करना पराजय पाने का डर ही तो नहीं? ऐसे कायर को पराक्रमी कैसे माना जा सकता है? इस संदेह का समाधान जानते हुए भी न देंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इसके उत्तर में विक्रमार्क ने यों कहा: "श्रीकेतु को शांतिकामी और युद्ध विमुख बताने में कोई संदेह नहीं है। जनता के हित के वास्ते उसने अपनी स्वतंत्रता तक की परवाह नहीं की। पर वह शांति के वास्ते देश व प्रजा के हित को त्याग करनेवाला मूर्ख नहीं है। विदर्भ देश अकाल के शिकार हो, वहाँ की प्रजा में अराजकता फैल जाय तो विक्रमपुरी खतरे में पड़ सकती है। यदि वहाँ के लोग विक्रमपुरी पर झपट पड़े तो विक्रमपुरी की प्रजा को युद्ध से बढ़कर अधिक नुक़सान हो सकता है। अलावा इसके विदर्भ से प्राप्त समाचारों से यह बात स्पष्ट हो गई कि वहाँ के राजा अपनी प्रजा को नियंत्रण में न रख पाये। इसी वास्ते श्रीकेतु ने न केवल युद्ध करने का निर्णय लिया और उसके वास्ते जल्दबाजी भी दिखाई। यह युद्ध उसकी शांतिप्रियता का चिह्न ही कहा जा सकता है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

चोरों का अंत

सिंदूर देश की सीमा पर के घने जंगलों में चोरों का एक दल रहा करता था। चोर गाँवों पर हमला करके जनता की संपत्ति को लूट लिया करते थे। सिपाही अगर उनका पीछा करते तो वे जंगलों में भाग जाते थे।

सिंदूर देश के राजा अनेक प्रयत्न करके भी चोरों को बंदी न बना पाये, आख़िर उन्होंने घोषणा की कि जो व्यक्ति चोरों के सरदार का सर काटकर ला देगा उसके साथ राजकुमारी का विवाह करके अपने अनंतर उस व्यक्ति का राज्याभिषेक किया जाएगा।

इस घोषणा के बाद चोरों के सरदार ने भांप लिया कि उसके अनुचर लोभ में आकर उसे पकड़वा सकते हैं। इसलिए वह किसी पर विश्वास न कर चुपके से कहीं भाग गया।

चोरों ने एक दूसरे सरदार को चुनना चाहा, लेकिन कोई भी सरदार बनने को तैयार न हुआ। बिना सरदार के चोर सब यत्र-तत्र भाग गये। इस तरह चोरों का अंत हो गया।

अधिकारी की पत्नी

राजा प्रचण्डसेन के राज्य में प्रत्येक गाँव में दो राज-कर्मचारी नियुक्त थे, वे गाँव के सारे व्यवहारों को निबटा लेते थे। पर इन राज-कर्मचारियों द्वारा अधिकार का दुरुपयोग करने व घूस लेने का खतरा बना रहता था, इसलिए उनकी निगरानी रखने के लिए राजा ने कुछ अधिकारियों को नियुक्त किया। वे अधिकारी अचानक किसी गाँव में पहुँच जाते, वहाँ की हालत की जाँच करके राजा के पास उसका प्रतिवेदन भेजा करते थे।

ऐसे अधिकारियों में से ही एक रामभद्र था। वह जिस किसी भी गाँव की जाँच करने जाता तो अपने साथ अपनी पत्नी को भी ले जाता था। लोग कहा करते थे कि रामभद्र अपनी पत्नी को छोड़ पल भर भी रह नहीं सकता है और उसके हर आदेश का पालन करता है।

रामभद्र की पत्नी के मन में यह अहंकार भरा हुआ था कि वह एक बहुत बड़े अधिकारी की पत्नी है। वह जहाँ भी जाती, राज-कर्मचारियों पर अपने पति से ज़्यादा अधिकार चलाया करती थी। लोग यह सोचकर उसके अत्याचारों को सहन कर जाते थे कि उसका विरोध करने पर अधिकारी के द्वारा उनकी कोई हानि होगी।

उन दिनों में कृष्णापुर में हरि और गिरि नामक दो राज-कर्मचारी थे। वे दोनों एक ही मकान के दो हिस्सों में रहा करते थे। रामभद्र एक बार अपनी पत्नी समेत कृष्णापुर आया और उन कर्मचारियों के घर में ठहर गया।

हरि और गिरि दोनों ईमानदार थे। सब लोग उनके व्यवहार से प्रसन्न थे, इसलिए रामभद्र के द्वारा उनकी कोई हानि होने की संभावना न थी। उन

शकुंतला गार्गव

दोनों ने रामभद्र के लिए सारी सुविधाएँ कर दीं और वे रामभद्र को गाँव की जांच करने के लिए अपने साथ ले गये।

उस वक़्त रामभद्र की पत्नी ने हरि और गिरि की पत्नियों पर अपना अधिकार चलाना चाहा।

अधिकारी की पत्नी की दिन भर सेवा करके गिरि की पत्नी जब थक गई, तब वह एक कुर्सी पर बैठ गई। इसे देख रामभद्र की पत्नी ने गुस्से में आकर डांट दिया— "तुम एक छोटे कर्मचारी की पत्नी हो, मेरे बराबर कुर्सी पर बैठती हो? उठ जाओ।"

गिरि की पत्नी को यह फटकार बड़ी बुरी लगी, वह बिगड़ कर बोली—"कुर्सी पर बैठने से क्या हुआ? तुम से हम किस बात में कम हैं? असली बात तो यह है कि यह तो हमारा घर है।"

"यह घर तुम्हारा हो सकता है। पर याद रखो, तुम्हारे पति का मेरे पति अधिकारी हैं।" रामभद्र की पत्नी ने अपना बड़प्पन जताया।

ये बातें सुन हरि की पत्नी भी गुस्से में आकर बोली—"तुम्हारे पति हमारे पतियों के अधिकारी हो सकते हैं, पर तुम हमारी अधिकारिणी नहीं हो! यह बात याद रख कर व्यवहार करो तो अच्छा होगा।"

रामभद्र की पत्नी से कुछ कहते न बना, वह चुप कर गई, लेकिन अपने पति के लौटने पर हरि और गिरि की पत्नियों पर नमक-मिर्च लगाकर शिकायत की।
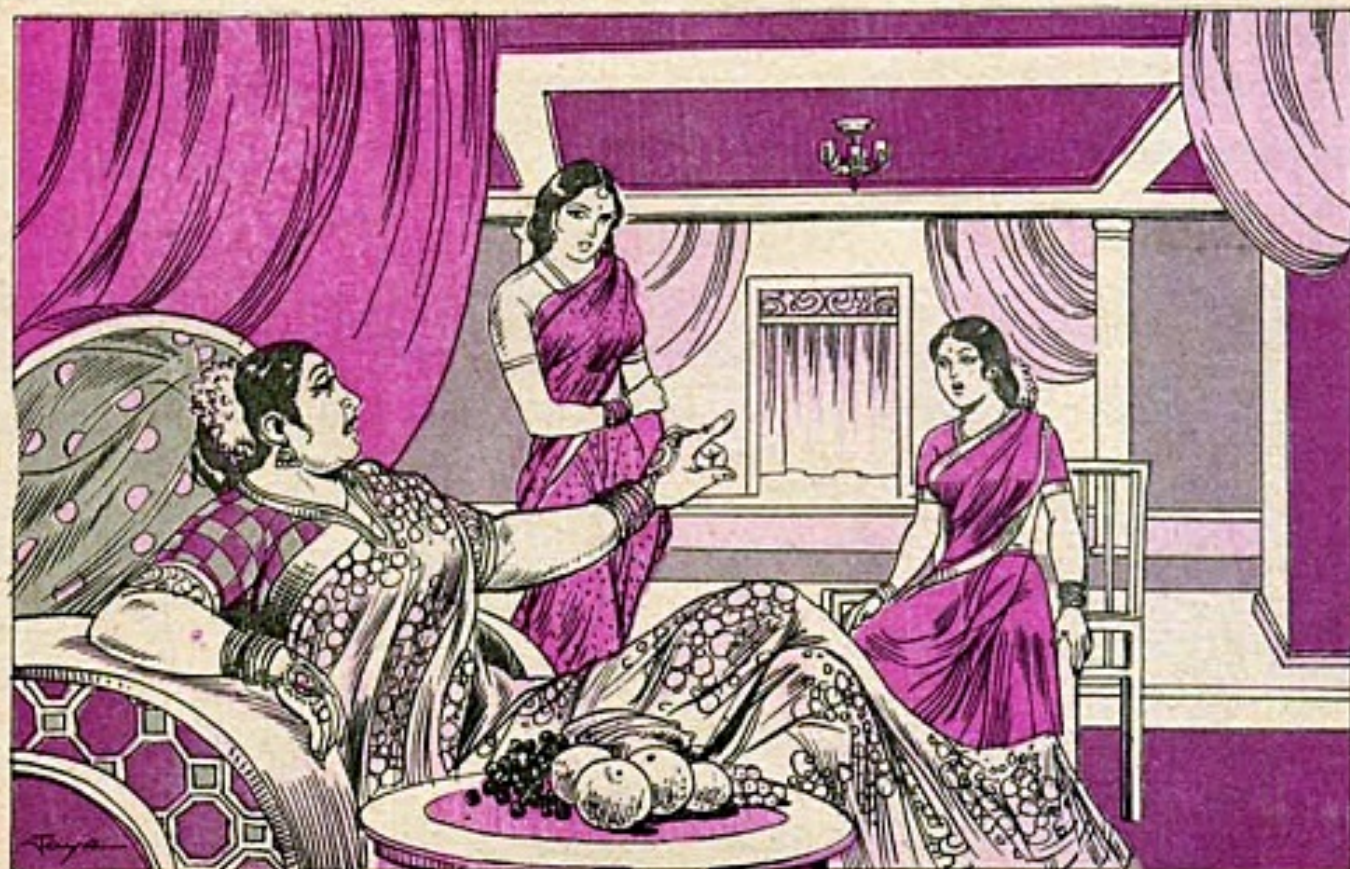
रामभद्र ने क्रोध में आकर हरि और गिरि से इसकी कैफ़ियत माँगी। उन दोनों ने अपनी अपनी पत्नियों के द्वारा सारी बातें जान लीं और रामभद्र से बोले—"इस मामले में हमारी पत्नियों का कोई दोष नहीं है। आप का हम लोगों पर हुकूमत चलाना सही है, न्याय संगत है, मगर आपकी श्रीमती का हमारी पत्नियों पर हुकूमत चलाना ठीक नहीं है।"

यह उत्तर सुनकर रामभद्र बिगड़ कर बोला—"मेरी श्रीमती तुम्हारी पत्नियों की अधिकारिणी नहीं हो सकती, पर वह मेरी अधिकारिणी है। इसलिए उसके निर्णय के आधार पर मैं तुम दोनों को नौकरियों से बरखास्त कर देता हूँ।"

इसके बाद हरि और गिरि ने रामभद्र को अनेक प्रकार से समझाना चाहा, लेकिन वह सुनने को तैयार न था।

रामभद्र के चले जाने पर असली बात गाँववालों पर प्रकट हुई। उन लोगों ने एक बुजुर्ग को राजा के पास भेजकर सारा वृत्तांत उनके सामने सुनवाया। गुप्तचरों के द्वारा राजा ने पता लगाकर उस मामले को सच्चा पाया।

फिर क्या था, उस महीने का वेतन रामभद्र को नहीं मिला। वह घबराकर कोशाध्यक्ष के पास पहुँचा। कोशाध्यक्ष ने साफ़ बताया—"इस मामले के बारे में मैं कुछ नहीं जानता, आप राजा की सेवा में पहुँच कर असली बात जान लीजिए।"

रामभद्र ने राजा के दर्शन करके अपने वेतन की बात बताई।

राजा ने स्पष्ट कह दिया—"मैंने सोचा था कि तुम आज तक मेरे अधिकार के अंतर्गत काम करते हो, पर मुझे मालूम हुआ कि तुम्हारा अधिकारी तुम्हारी पत्नी है। तुम अपना वेतन अपनी पत्नी से ले लो। अब यहाँ से चले जाओ।"

इसके बाद रामभद्र की नौकरी छूट गई, साथ ही हरि और गिरि को उनके पद फिर प्राप्त हो गये।
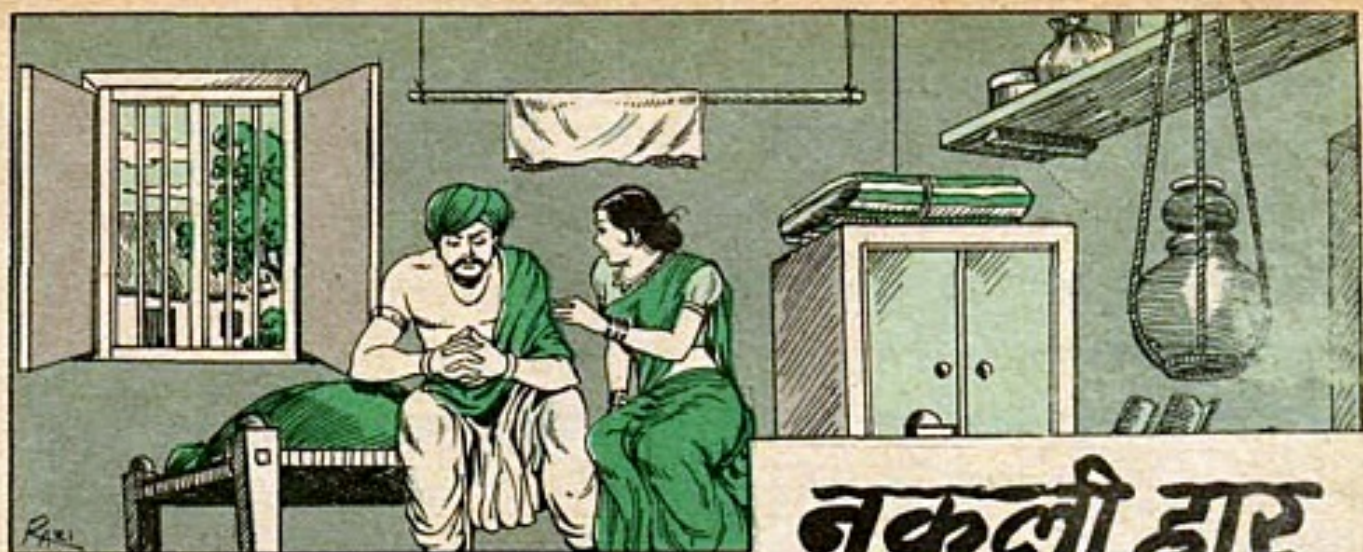
नकली हार

एक गाँव में रामावधानी नामक एक पंडित था। वह बच्चों को पढ़ाता, जो कुछ उनसे मिलता, उसी से अपना परिवार चलाता था। उसकी पत्नी मीनाक्षी के मन में बहुत दिन बाद अपने मायके जाने की इच्छा पैदा हुई। उसने अपने पति से यह बात कही।

इस पर अवधानी ने समझाया—"तुम जाओ, मेरे भी चलने से बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ेगी और साथ ही खर्चा भी अधिक होगा।"

"अच्छी बात है! मगर हमारी शादी के बाद आप ने मुझे एक भी गहना बनाकर नहीं दिया। यह बात मालूम होने पर मेरे मायके में मेरी इज्जत ही क्या रहेगी? इसलिए मेरे जाने के पहले आप कम से कम एक सोने का हार बनवाकर दीजिए।" मीनाक्षी ने मिन्नत की।

"मीनाक्षी! तुम मेरी हालत जानती हो! बच्चों से जो कुछ मिलता है, उससे हम मुश्किल से अपनी गृहस्थी चला पाते हैं। गहनों के लिए मैं कहाँ से रुपये जुटा सकता हूँ?" रामावधानी ने समझाया।

"घर में मेरी माता के दिये हुए चांदी के कड़े पड़े हुए हैं। उन्हें बेचकर मुझे एक हार बनवा दीजिए!" मीनाक्षी ने कहा।

दूसरे दिन रामावधानी शहर में गया। चांदी के कड़े बेचकर उनके बदले एक सोने का हार देने को दूकानदार से कहा।

दूकानदार ने कहा—"कड़ों की क़ीमत पर असली सोने का एक भी गहना नहीं मिल सकता। चाहे तो आप नकली सोने का हार लीजिए। आज कल सोने के मुलम्मे चढ़ाये गये गहने बिकने लगे हैं। उनका रंग एक दम सोने जैसा ही होता है। रंग कभी धुलता नहीं, हार के साथ

गिरिजा माथुर

थोड़े से रुपये तुम्हें वापस भी मिल जायेंगे।" दूकानदार ने समझाया।

दूकानदार ने जो हार दिखाया, वह बड़ा ही सुंदर था। रामावधानी ने उसे ले जाकर अपनी पत्नी को दिया और समझाया—"फिलहाल तुम इसे पहन लो। अगली बार जब तुम फिर अपने मायके जाओगी, तब तक थोड़ा धन इकट्ठा करके खरे सोने का गहना बनवा दूंगा।"

मीनाक्षी ने अपने पति से कहा—"मैं अपने पीहरवालों से इसे खरे सोने का हार बताऊँगी। तुम भी सब से यही बात बताओ।"

ससुराल से कई दिन बाद लौटी मीनाक्षी का उसके भाई माधव और भाभी रुक्मिणी ने बड़े ही प्यार और आदर के साथ स्वागत किया। रुक्मिणी अपनी ननद के गले में चकाचौंध करनेवाले हार को देख बहुत खुश हुई और पूछा—"मीनाक्षी! तुम ने यह हार कब बनवा लिया?"

"हाल ही में बनवाया है, भाभीजी! मेरे पतिदेव के पास जमीन्दार का लड़का पढ़ता था। अपनी पढ़ाई समाप्त कर घर लौटते वक़्त वह जो गुरु दक्षिणा दे गया, उससे यह हार बनवाकर दिया। मैंने कई तरह से उन्हें समझाया कि मुझे इस वक़्त हार की ज़रूरत क्या है? पर मेरी बात सुने, तब न?" यों मीनाक्षी ने एक मन गढत कहानी सुनाई। उस हार को देखने पर रुक्मिणी के

मन में भी यह इच्छा पैदा हुई कि काश! मेरे भी ऐसा हार हो तो क्या ही अच्छा है! उस रात को रुक्मिणी ने यह बात अपने पति को बताई।

माधव ज्यादा पढ़ा-लिखा न था। पर वह बाप-दादों की जो कुछ जमीन थी, उसमें खुद खेतीबाड़ी कर जैसे-तैसे अपनी गृहस्थी चला लेता था। यह बात बताने पर रुक्मिणी निराश हो गई। इस पर माधव बोला–"अच्छी बात है, तुम चिंता न करो। कल शहर जाकर धान के रुपये वसूल करके तुम्हारे वास्ते हार लेते आऊँगा।"

पर माधव धन वसूल करके जब गहनों की दूकान पहुँचा और सौदा किया, तब उसे लगा कि साल भर की आमदनी में से अधिकांश हिस्सा हार के पीछे ही खर्च होने जा रहा है, ऐसी हालत में साल भर का गुजारा कैसे हो? माधव को पशोपेश में पड़े देख दूकानदार ने पूछा–"देखो भाई! नकली सोने का सुंदर हार है, सस्ते में मिलेगा, क्या देखना चाहोगे?"

इन शब्दों के साथ दूकानदार ने जो हार दिखाये, उन्हें देख माधव आश्चर्य चकित हो गया। उनमें से एक हार एक दम मीनाक्षी के हार जैसे ही था। पर मीनाक्षी का हार खरे सोने का बताया जा रहा है, यह तो नकली सोने का है। बस, दोनों में अंतर यही है। इस अंतर को कोई समझ न पायेगा। फिर क्या था, माधव ने बिना हिचकिचाहट के उस
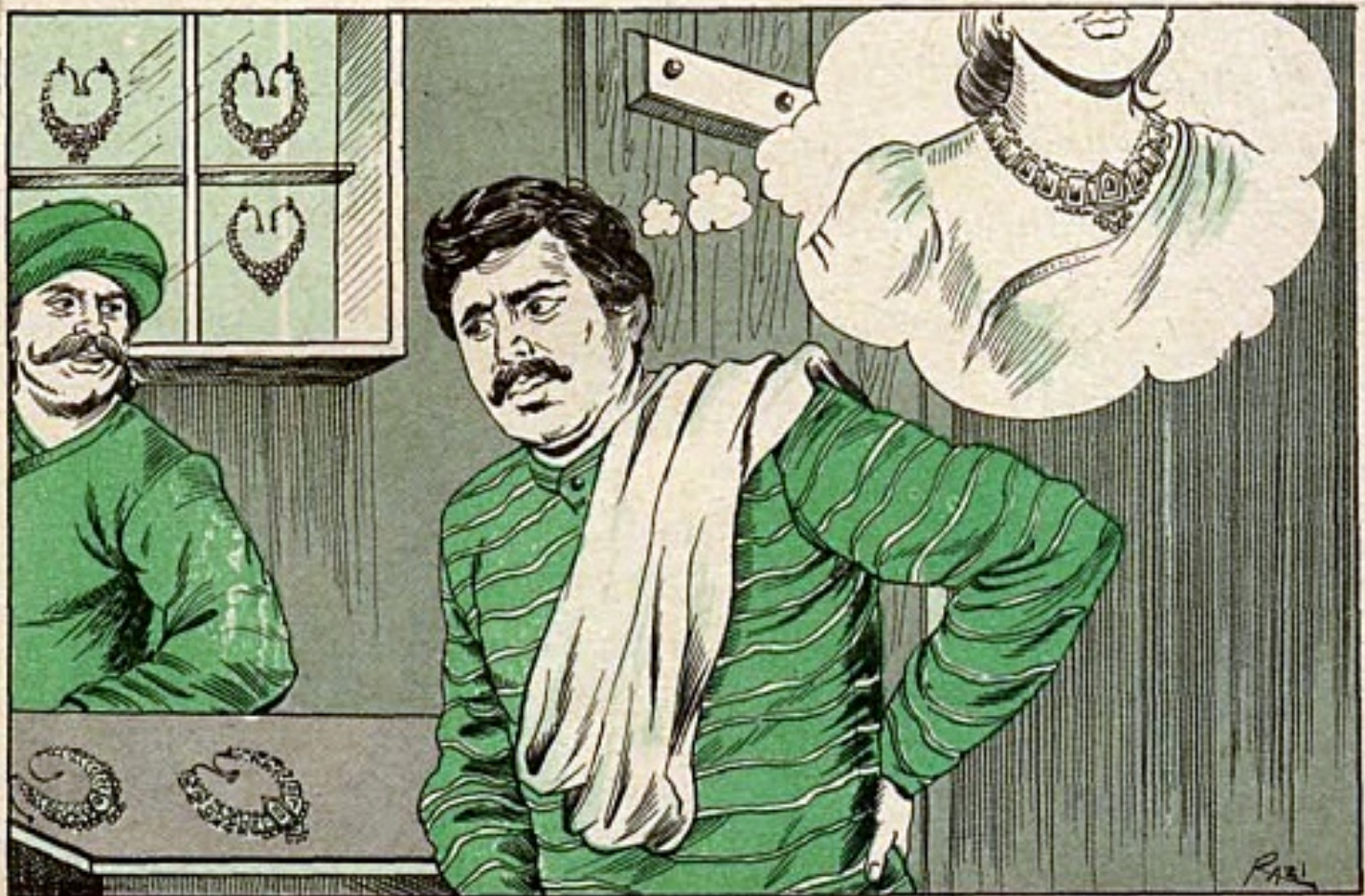
हार को खरीद लिया और घर चला आया। माधव के द्वारा लाये गये हार को देखते ही रुक्मिणी बड़ी खुश हुई। क्यों कि वह बिलकुल मीनाक्षी के हार जैसे ही था। पर माधव ने रुक्मिणी को साफ़ बता दिया कि यह खरे सोने का नहीं है। साथ ही उसने रुक्मिणी को यह वचन दिया कि अगले वर्ष धन जोड़ करके खरे सोने का हार बनवाकर देगा। पर रुक्मिणी तात्कालिक रूप से यह सोचकर संतुष्ट हुई कि मीनाक्षी के हार के बराबर का हार उसे भी मिल गया है।

मीनाक्षी भी रुक्मिणी के हार को अपने ही हार के समान पाकर आश्चर्य में आ गई, मगर उसे खरे सोने का हार समझकर ईर्ष्या से भर उठी। रुक्मिणी और मीनाक्षी ने एक दूसरे के देख भीतर ही भीतर ईर्ष्या करते सारा दिन बिताया। उस रात को दोनों को नींद न आई।

सवेरे त्योहार का दिन था। रुक्मिणी ने सवेरे बच्चों को नहलाया, नये कपड़े पहनाकर खुद नहाने चली गई। मौक़ा पाकर मीनाक्षी ने अपना हार रुक्मिणी के हार की जगह रखकर उसका हार उठा लिया। इस तरह उनके हार बदल गये।

इसी प्रकार मीनाक्षी के स्नान करते समय रुक्मिणी ने दोनों हार बदल डाले। फिर क्या था, दोनों के हार फिर से उनके अपने हाथ आ गये, लेकिन दोनों यह सोचकर संतुष्ट हो गईं कि उनके नकली हार की जगह असली सोने के हार आ गये। त्योहार आनंदपूर्वक समाप्त हुआ, मीनाक्षी घर लौट आई।

दूसरे साल रुक्मिणी ने खरे सोने का हार बनाने के लिए तक़ाजा नहीं किया, कम से कम याद तक नहीं दिलाया। इस पर वह मन ही मन खुश हुआ।

इसी प्रकार रामावधानी यह सोचकर डरता रहा कि दूसरे साल मीनाक्षी खरे सोने का हार बनाने पर जोर डालेगी। मगर उसके याद न दिलाते देख वह खुद आश्चर्य में आ गया।

नारद

सप्तर्षियों की सूची में सात के नाम गिनाये जाते हैं। उनमें एक सूची में नारद का नाम भी है। उनके साथ सप्तर्षियों की सूची में संवर्त, मेरुसावर्ण, मार्कंडेय, सांख्य, योगी और दुर्वास भी हैं। पुराणों में नारद को देवर्षि बताया गया है। वे ब्रह्मा के पुत्र थे। एक कहानी के अनुसार दक्ष की पुत्रियों में से प्रिया नामक नारी से ब्रह्मा के द्वारा इनका जन्म हुआ है। इसी प्रकार ये ब्रह्मचारी के रूप में लोकप्रिय हैं। मगर एक कहानी के अनुसार नारद ने सृंजय नामक राजा की पुत्री सुकुमारी के साथ प्यार करके विवाह किया था।

नारद का अर्थ "पानी देनेवाला" (मेघ) होता है। नारद के संबंध में हम कई कहानियां सुनते हैं—ये एक स्थान पर स्थिर रूप से निवास न करके लोक संचारी के रूप में सदा भ्रमण किया करते हैं, एक स्थान के समाचार दूसरे स्थान तक पहुँचाते रहते हैं, 'महती' नामक वीणा पर सदा गाया करते हैं। देवता वर्ग के होकर भी दानवों के साथ मैत्रीभाव रखते हैं। झगड़े पैदा करके आनंद लूटा करते हैं, आदि। ये कलहाशन और कलहभोक्ता नाम से भी प्रसिद्ध हैं। एक कहानी है कि पार्वती के प्रति जलंधर के मन में मोह पैदा कर नारद उसकी मृत्यु के कारण बने हैं, इसी प्रकार नारद ने गरुड़ को कद्रुव के पुत्र सांपों पर उकसाया था। कालयवन को कृष्ण पर उकसाकर नारद ने ही उसे मरवा डाला था।

नारद के संगीत के बारे में भी एक विचित्र कहानी प्रचलित है। संगीत शास्त्र में तुंबुर और नारद विशेष प्रसिद्ध हैं। वास्तव में तुंबुर की नारद से कोई

तुलना नहीं हो सकती। तुंबुर तो गंधर्व है, वह 'कलावती' नामक वीणा पर गाया करते हैं।

एक बार कौशिक नामक एक व्यक्ति स्वर्ग में जाकर अपना संगीत सुना रहे थे, उस वक़्त वहाँ पर लक्ष्मीदेवी, उनकी परिचारिकाएँ, नारद और तुंबुर भी आ पहुँचे। लक्ष्मीदेवी ने तुंबुर के प्रति सहानुभूति दिखाकर कौशिक के साथ उसे भी गाने की प्रेरणा दी और अंत में उसे पुरस्कार भी दिया। इस पर नारद ने अपमान का अनुभव किया।

श्रीमहाविष्णु ने नारद को बहुत ही खिन्न देखकर उन्हें सांत्वना देकर समझाया—"नारद! अगर तुम संगीत में प्रवीणता प्राप्त करना चाहते हो तो मानसोत्तर पर्वत पर चले जाओ। वहाँ पर गान बंधु नामक एक उल्लू है, उसके यहाँ संगीत का अभ्यास करो।" नारद ने उल्लूक के यहाँ संगीत की शिक्षा पाई, मगर तुंबुर के साथ स्पर्धा करके हार गये।

दूसरी बार अपमानित हो नारद विष्णु के पास पहुँचे और अपने अपमानित होने का समाचार उन्हें सुनाया।

इस पर विष्णु ने उन्हें बताया—"नारद, तुम चिंता न करो! जब मैं कृष्णावतार लूँगा, उस वक़्त तुम मेरे यहाँ संगीत सीख सकते हो।"

इसी प्रकार नारद ने श्रीकृष्ण के यहाँ संगीत का अभ्यास करके उस विद्या में परिपूर्णता प्राप्त की।

कहा जाता है कि नारद के 'पर्वत' नामक एक भानजा था। दोनों मिलकर संसार का भ्रमण किया करते थे। पर कोई यह नहीं जानता कि रिश्ते में पर्वत कैसे नारद का भानजा होता है। कुछ लोगों का कहना है कि नारद का एक और नाम पर्वत है!

नारद और पर्वत दोनों मिलकर सदा-सर्वदा संसार का भ्रमण करते थे और वास्तव में उन दोनों के बीच किसी प्रकार के भेद न थे।
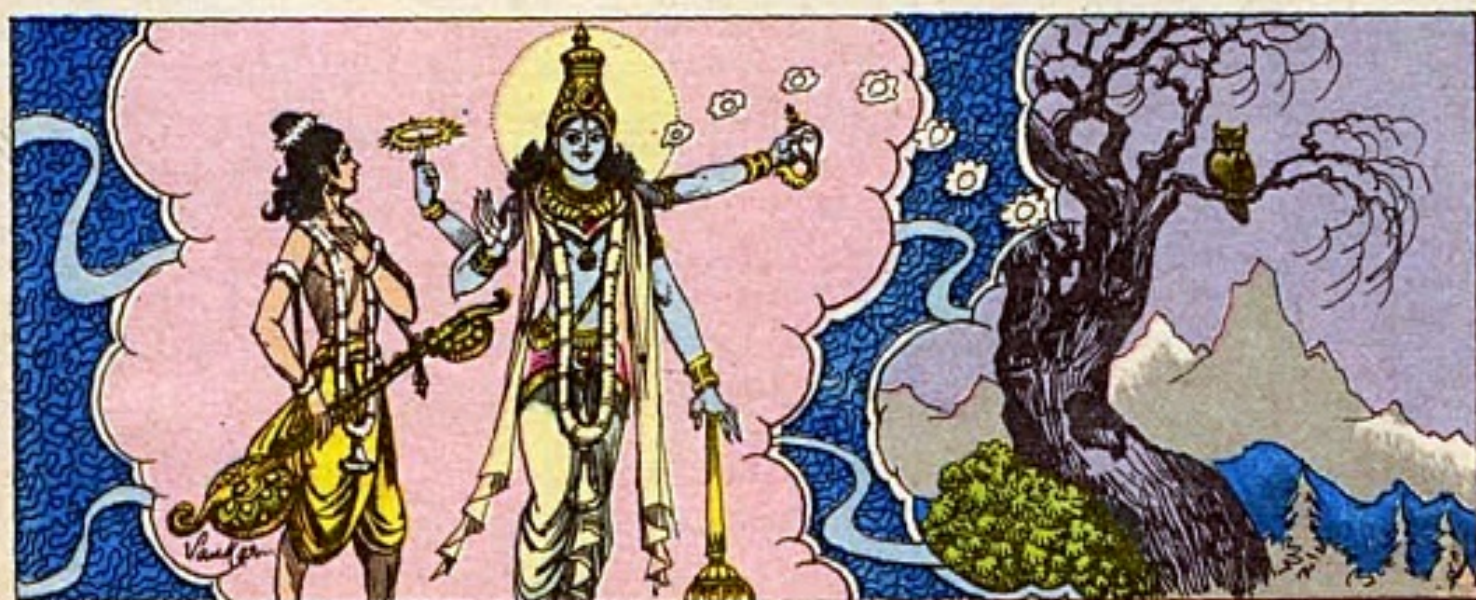
अंबरीष

नाभाग के पुत्र अंबरीष एक बड़े विष्णु भक्त थे। उनकी भक्ति पर प्रसन्न होकर विष्णु ने उन्हें अपना सुदर्शन चक्र देना चाहा। पर अंबरीष को कभी उसका उपयोग करने का मौक़ा न आया।

अंबरीष ने अपने जीवन काल में अनेक अश्वमेध यज्ञ किये। प्रत्येक यज्ञ की समाप्ति पर वे प्रसन्न होकर अपार दान दिया करते थे।
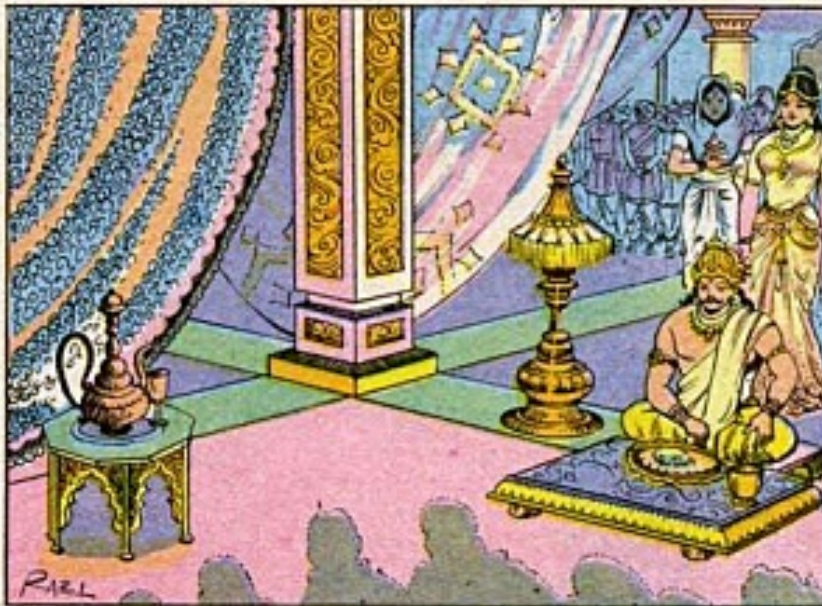
एक बार अंबरीष ने अपने नियम के अनुसार एकादशी का उपवास किया और द्वादशी की घड़ियों में वे भोजन करने बैठे।

इतने में उन्हें मुनि दुर्वास के आगमन का समाचार मिला। अंबरीष भोजन किये बिना उठ खड़े हुए, दुर्वास का स्वागत करके उन्हें खाने का निमंत्रण दिया। दुर्वास स्नान करके लौटने की बात कहकर चले गये।

पर वे बड़ी देर तक नहीं लौटे। इधर द्वादशी की घड़ियाँ बीतने को थीं। पारण करना ज़रूरी था, पर अतिथि को छोड़ अंबरीष खाना नहीं खा सकते थे, इसलिए उन्होंने केवल जल पिया।
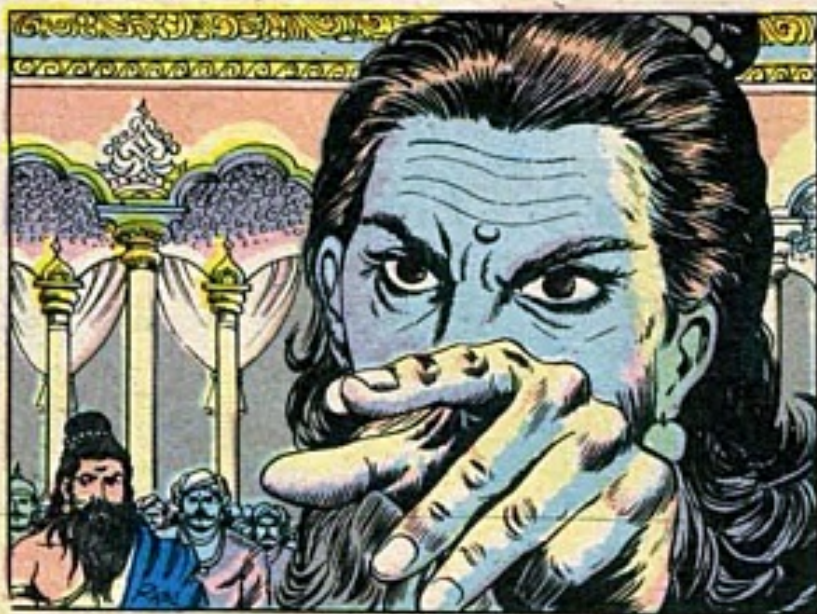
ठीक उसी वक्त दुर्वास मुनि स्नान समाप्त कर आ पहुँचे और क्रोध में आकर गरजकर बोले—"क्या तुम मुझे खाना खिलाये बिना उपवास का भंग करते हो?"

दुर्वास ने क्रोध में आकर अपनी एक जटा को खींचकर जमीन पर दे मारा। उसमें महाकृत्य पैदा हुआ और अंबरीष पर टूट पड़ा।

उस समय अंबरीष ने अत्यंत भक्ति भाव से सुदर्शन चक्र का स्मरण किया। उस चक्र ने महाकृत्य का वध कर डाला।

राक्षस का वध करने के बाद सुदर्शन चक्र ने दुर्वास का पीछा किया, उसे रोकने में दुर्वास की सारी तपोशक्ति भी कामयाब न हुई।
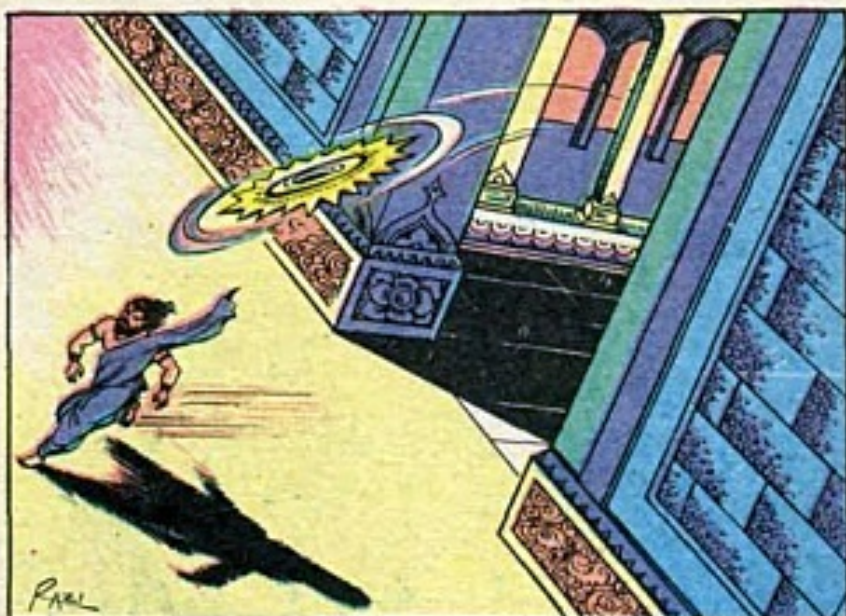
इस पर दुर्वास भागकर जंगल में जा छिपे। सुदर्शन चक्र के प्रहार से जंगल में दावानल पैदा हुआ। तब दुर्वास समुद्र में छिप गये। सुदर्शन चक्र ने समुद्र में प्रवेश कर हलचल मचा दी।

कहीं सुरक्षा न पाकर दुर्वास विष्णु के पास दौड़ गये। अपनी रक्षा करने की प्रार्थना करते हुए विष्णु के पैर पकड़ लिये। विष्णु ने दुर्वास को सलाह दी कि वे अंबरीष की शरण में जावे।

दुर्वास ने अंबरीष की शरण माँगी। तब जाकर सुदर्शन चक्र ने दुर्वास को छोड़ दिया। इस प्रकार एक सज्जन व्यक्ति की सज्जनता के कारण एक घमण्डी का दिमाग ठिकाने लगा।

भरत

पुराणों में 'भरत' नामवाले कई व्यक्ति दिखाई देते हैं। एक भरत के तक्ष और पुष्कल नामक दो पुत्र थे। उन्होंने युद्ध करके बहुत-सा राज्य जीत लिया। दो नगरों का निर्माण करके अपने पुत्रों को उनके राजा बनाया। तक्ष के पुत्र ने जिस नगर पर शासन किया, वह तक्षशिला कहलाया। वह इतिहास प्रसिद्ध नगर है। एक जमाने में उस प्रदेश को गंधर्व देश कहा जाता था। पुष्कल ने जिस नगर पर राज्य किया, वह पुष्कलावती है जो गांधार देश में था।

रामायण के अनुसार दशरथ के कैकेई के द्वारा जो पुत्र हुआ, उनका नाम भी भरत है। उनकी कहानी रामायण के द्वारा प्रसिद्ध हुई।

एक और भरत ऋषभ और जयंती के पुत्रों में से एक थे। उनके अन्य भाई थे– कुशावर्त, इलावर्त, ब्रह्मवर्त, आर्यावर्त, मलयकेतु, भद्रसेन और विदर्भ। कहा जाता है कि इन्हीं भरत के कारण हमारे देश का नाम भारत वर्ष पड़ा और इनके भाइयों ने हमारे देश के विभिन्न प्रांतों में राज्य किया जिससे उन प्रदेशों के उनके नाम पड़े। भरत ने जिस प्रदेश पर राज्य किया, उसका नाम अजनाभ था।

ये भरत बड़े ही भूतदया रखनेवाले थे। इन्होंने बहुत समय तक राज्य किया, बाद को अपना राज्य अपने पुत्रों को सौंपकर तपस्या करने वन में चले गये। एक दिन वे नदी में नहा रहे थे, तब एक गाभिन हिरणी उसी नदी में आकर पानी पीने लगी। उस समय बादल घिर आये, चारों ओर अंधकार फैल गया और भयंकर रूप से मेघ गरजने लगे। हिरण डर गई, वहीं प्रसव करके मर गई। वृद्ध

भरत उस हिरणी के शावक को देख दया से भर उठे। उसे अपने आश्रम में लाकर बड़े ही प्यार से उसे पालने लगे। कहा जाता है कि वे अपने मरते वक़्त भी उसी हिरण का स्मरण करते रहे। इस कारण वे एक हिरण के रूप में पैदा हुये।

इन भरतों के अलावा 'जड़ भरत' नामक एक और व्यक्ति हैं।

मगर बालक के रूप में यश प्राप्त करनेवाला व्यक्ति शकुंतला का पुत्र भरत है। मेनका और विश्वामित्र ने जिस कन्या को जन्म देकर त्याग दिया था, उसे शकुंतल पक्षी ले जाकर पालने लगे। इस पर कण्व महामुनि ने उस कन्या को अपने आश्रम में लाकर अपनी पुत्री के समान उसे पाल-पोसकर बड़ा किया।

एक बार दुष्यंत नामक राजा शिकार खेलते कण्व महामुनि के आश्रम में गये। वहाँ पर शकुंतला को देख उस पर मोहित हुए, तब गांधर्व विधि से शकुंतला के साथ विवाह करके अपने रास्ते चले गये। तब कण्व मुनि के आश्रम में ही शकुंतला ने भरत का जन्म दिया।

शकुंतला का पुत्र बचपन से ही सभी जानवरों को पकड़कर बांध देता था जिससे सब कोई उसे 'सर्व दमन' नाम से पुकारा करते थे। उस बालक ने आश्रम में ही समस्त शास्त्रों का अध्ययन किया।

जब वह बालक बड़ा हुआ, तब कण्व मुनि ने शकुंतला और उसके पुत्र को राजा दुष्यंत के पास भेजा। दुष्यंत ने उस बालक को अपना पुत्र मानने से इनकार किया। इस पर आकाशवाणी ने राजा को आदेश दिया—"राजन, यह बालक आप ही का पुत्र है! आप इसे भरण करे।" इस कारण उस बालक का नाम 'भरत' पड़ गया है।

भरत के तीन पत्नियाँ थीं। उनके तो बच्चे पैदा हुए, मगर मर गये। भागवत में बताया गया है कि इस कारण भरत ने भरद्वाज को स्वीकार कर उनका पालन-पोषण किया।

विजय-पराजय

प्राचीन काल में विदर्भ देश पर राजा विजयपाल शासन करते थे। उनके शौर्य और पराक्रम के बारे में सभी देशों में कई कहानियां प्रचलित हो गई थीं। शौर्य और पराक्रम के गीत रचकर लोग गाया करते थे। क्योंकि विजयवर्मा कभी पराजय को जानते न थे। साथ ही चारों तरफ़ के राज्यों में ऐसा कोई राजा न था जो विजयपाल के साथ युद्ध करके पराजित न हुए हो।

राजा विजयपाल के कोई पुत्र न था। जलजादेवी नामक केवल एक पुत्री थी जो विवाह के योग्य हो चुकी थी। मगर विजयपाल ने यह सोचकर अपनी पुत्री के विवाह का कोई प्रयत्न नहीं किया कि उनके समान पराक्रमी की पुत्री के साथ विवाह करने का परक्रमशाली कहीं नहीं है। जलजा के साथ विवाह करने की अभिलाषा रखनेवाले कई राजकुमार थे, मगर विजयपाल के राज्य पर आक्रमण करके युद्ध में हार जाने की अपेक्षा चुप रहना ही उन लोगों ने अच्छा समझा।

लेकिन जयपुर के युवराजा मणिभद्र ने विजयपाल के साथ युद्ध करने का निश्चय कर लिया। मणिभद्र का पिता इसके पूर्व विजयपाल के हाथों में हार गया था। इसलिए माणिभद्र ने बचपन से ही युद्ध विद्याओं में विशेष प्रशिक्षण पाकर व्यूह-रचना तथा अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग के अनेक रहस्य जान लिये थे। उसका आशय विजयपाल को हराकर जलजा के साथ विवाह करने का था।

माणिभद्र जिस वक़्त अपनी सेनाओं के साथ विदर्भ पर आक्रमण करने आया, उस वक़्त राजा विजयपाल अस्वस्थ था। बुढ़ापा निकट आने से राजवैद्यों का इलाज

२५ साल पहले की चन्दामामा की कहानी

भी सही ढंग से काम न कर पाया। बीमारी के साथ युद्ध भी आ पड़ा जिससे विजयपाल का स्वास्थ्य और भी गिर गया। ऐसी हालत में राजा यह सोचकर खाट पर से उठ बैठे कि वे खुद युद्ध क्षेत्र में जाकर अंतिम विजय प्राप्त कर लेंगे। मंत्री, वैद्य आदि ने राजा को रोका, मगर इस कारण उनका मन और ज़्यादा विकल हो उठा। राजा दिन-रात युद्ध के समाचार सुना करते थे। शत्रु के व्यूह के विरुद्ध प्रति व्यूहों की रचना करके सेना को युद्ध क्षेत्र में भेजा करते थे। अपने प्रति व्यूहों के विफल होने के समाचार सुनकर राजा खिन्न हो जाते थे।

यों थोड़े दिन बीत गये। युद्ध क्षेत्र में विदर्भ देश की पराजय की सूचनाएँ स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। इसके साथ राजा की बीमारी भी बढ़ती जा रही थी। महामंत्री ने सोचा कि राजा को युद्ध के सच्चे समाचार सुनाना खतरे से खाली नहीं है। वह झूठ-मूठ के समाचार देने लगा। राजवैद्य ने आखिर स्पष्ट बता दिया कि किसी भी हालत में राजा साठ घड़ियों से अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। दो दिन के अंदर मणिभद्र को पूर्ण विजय प्राप्त होने के आसरे दिखाई दे रहे थे। इस बीच राजा को मणिभद्र की संपूर्ण विजय का समाचार ही क्यों सुनावे? महाराजा को अकारण क्यों दुख पहुँचावे?

यों विचार कर महामंत्री ने राजा से कहा–"महाराज! आज तक हमारी सेनाएँ शत्रु सेना के समक्ष निर्भीक खड़े हो लड़ रही थीं। अब शत्रु सेना में भी भगदड़ मच गई है।" महाराजा उस दुर्बल हालत में भी मुस्कुरा उठे। गहरी सांस लेकर उन्होंने आँखें बंद कीं।

आखिर हुआ क्या? महामंत्री और वैद्य के अंदाज? साठ घड़ियाँ बीत गईं। राजा अब भी जीवित थे। युद्ध समाप्ति पर था।

राजा ने आँखें खोल कर क्षीण स्वर में पूछा—"युद्ध के समाचार क्या हैं?"

"महाराज! विजयलक्ष्मी हम्हीं को वरने जा रही है। शत्रु किसी भी क्षण समझौते के लिए तैयार हो सकते हैं।" मंत्री ने उत्तर दिया। अब उनके सामने बड़ी समस्या यह थी कि राजा की मृत्यु पहले होगी या शत्रु पहले दुर्ग में प्रवेश करेगा। महाराजा की मृत्यु के बाद चाहे कुछ भी हो जाय, मंत्री को विशेष दुख न होगा। मगर ऐसा न हुआ। मणिभद्र अपनी सेनाओं के साथ दुर्ग के मुख द्वार में प्रवेश कर रहा था। यह आहट पाकर राजा ने आँखें खोलकर पूछा—"महामंत्री, क्या हम जीत गये? जल्दी बताइये यह कैसा कोलाहल है?"

"महाप्रभु! हमारी सेनाएँ विजय घोष करते रण क्षेत्र से लौट रही हैं।" मंत्री ने कहा।

"मैं पहले ही जानता था। मेरी पराजय कभी नहीं हो सकती।" यों कहते राजा ने फिर आँखें बन्द कर लीं।

थोड़ी ही देर में राजमहलों व अंतःपुर पर माणिभद्र ने अधिकार कर लिया, दरबार बुलाकर विदर्भ के मंत्री तथा सेनापतियों को उपस्थित होने का आदेश दिया। मंत्री को जाना जरूरी था। महा

मन्त्री जब राजा की उंगली से राजमुद्रिका निकाल रहा था, तब राजा ने आँखें खोलकर पूछा—"यह आप क्या कर रहे हैं?"

"महाप्रभु! पराजित शत्रु के साथ संधि करने जा रहा हूँ। संधि-पत्र पर राज-मुद्रिका की छाप अंकित करनी है न?" मंत्री ने जवाब दिया। इस पर अचानक राजा को लगा कि उनमें नई स्फूर्ति आ गई हो। वे मंत्री की मदद से उठ बैठे और बोले—"दरबार में मैं स्वयं प्रवेश कर रहा हूँ, सारा इंतजाम कर दीजिए।"

महामंत्री को लगा कि वह पागल होता जा रहा है। उसकी समझ में न आया कि अब क्या किया जाय?

"जो आज्ञा महाराज!" बताकर मंत्री शीघ्र दरबार पहुँचा। वहाँ पर पहले से ही माणिभद्र सिंहासन पर विराजमान था। संधि-पत्र लिखा जा रहा था।

"महाराज! मेरा एक निवेदन है।" इन शब्दों के साथ मंत्री ने मणिभद्र को सारा वृत्तांत सुनाया। तब बोला– "महाराज! हमारे प्रभू ज्यादा से ज्यादा एक-दो घड़ी ही जीवित रह सकते हैं। आप उनसे सचाई गुप्त रख सके तो मैं तथा विदर्भ की सारी प्रजा आजीवन आप के प्रति कृतज्ञ बने रहेंगे।"

मणिभद्र पहले नाराज़ तो हुआ, पर युवक होने के कारण उसने अंत में यह विचार कर मंत्री का निवेदन स्वीकार कर लिया कि देखें, आखिर क्या तमाशा होने जा रहा है!

उसी वक़्त सेवकों के सहारे अंतःपुर से महाराजा विजयपाल आ पहुँचे और अपने सिंहासन पर बैठ गये। बाजू में हाथ बाँधे खड़े हुए माणिभद्र को उन्होंने देखा।

"बेटा! तुम एक कुशल योद्धा हो! तुमने बड़ी अच्छी व्यूह-रचना की है! खाट पर लेटे मैंने स्वयं प्रति व्यूह रचा, इस कारण तुम हार गये, वरना तुम जरूर जीत जाते। मेरे हाथों में पराजित होना तुम्हारे लिए अपमान की कोई बात नहीं है। मैं तुम्हारे साथ प्रतिष्ठापूर्ण संधि करता हूँ। मैं अपनी पुत्री का विवाह तुम्हारे साथ करूँगा। तुम भले ही हार गये हो, पर यह राज्य तुम्हारा ही है?" महाराजा ने मुस्कुराते हुए कहा।

माणिभद्र पहले चकित रह गया। मगर सभा में प्रवेश करनेवाली राजकुमारी जलजा को देखते ही उनका विरोध करने का मन न हुआ। फिर क्या था, उन दोनों का वैभव पूर्वक विवाह संपन्न हुआ।

थोड़े महीने बाद उन्हें एक पुत्र हुआ। वृद्ध राजा अपने पोते को गोद में ले खिलाते हुए परमानंदित हुए। आश्चर्य की बात थी कि अंतिम समय तक वे अपनी पराजय का समाचार जानते तक न थे।

हितैषी

कई साल पहले शिवपुरी में भयंकर बाढ़ आई। गाँववाले सब शिवपुरी को खाली करके सुरक्षित प्रदेश में जा रहे थे। उन्हें सुरक्षित प्रदेश में जाना हो तो नाव से नदी को पार करना था। वहाँ पर सिर्फ़ एक नाव थी, सब लोग नाव पर जा बैठे। मगर गाँव का सब से बड़ा धनी कंजूस रामगुप्त और एक भिखारी मात्र बच रहें। रामगुप्त को अपना सारा माल बटोरने में देरी हो गई थी। अंत में आये रामगुप्त और भिखारी भी नाव पर सवार होने को हुए।

मगर मल्लाह ने कहा—"अब सिर्फ़ एक आदमी से ज्यादा इस नाव पर सवार नहीं हो सकता, क्योंकि नाव के डूबने का ख़तरा है। आप ही लोग निर्णय कर लीजिए कि इन दोनों में से किसको नाव पर चढ़ाना है।"

"कभी किसी का हित न करनेवाले इस धनी को यहीं पर छोड़ देंगे। भिखारी को नाव पर चढ़ा लो।" गाँववालों ने कहा।

"मैं तो इस गाँव का सब से बड़ा धनी हूँ। क्या इस भिखारी से ज्यादा उपयोगी व्यक्ति नहीं हूँ?" धनी ने पूछा।

"सच है! भिखारी तो कम से कम भीख देकर पुण्य कमाने का हमें मौक़ा देता है। आप के द्वारा आज तक किसी का कोई हित नहीं हुआ है।" गाँववालों ने कहा।
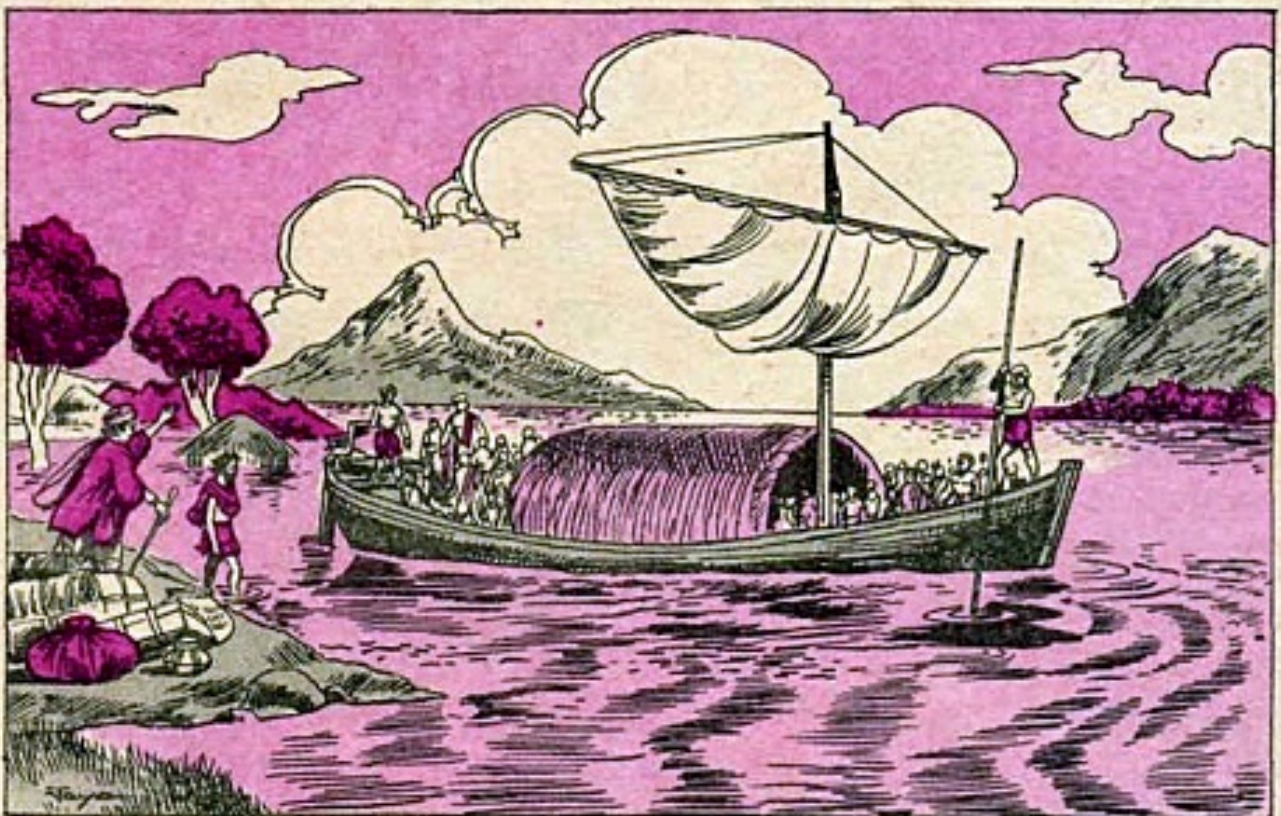
नाम-यश

गोकुलदास एक साधारण गृहस्थ था। उसे कोई नौकरी भी न मिली। जो कुछ आमदनी होती, घर बैठे खाते जाने से उधार लेने की नौबत आ जाती। इसलिए गोकुल की पत्नी उसे कोई व्यापार करने के लिए प्रोत्साहित करने लगी। मगर व्यापार करने के लिए पर्याप्त पूंजी भी उसके पास न थी। केवल दो सौ रुपये थे।

गोकुल विचार करने लगा कि इस छोटी-सी पूंजी से कौन सा व्यापार करे। एक दिन दुपहर के वक़्त एक अधेड़ उम्र की औरत उनके घर पहुँची, उसने पीने को पानी माँगा। गोकुल की पत्नी ने पानी पिलाया। पानी पीकर सुस्ताते हुए उस औरत ने पूछा कि वह उनके घर के काम-काजों में मदद दिया करेगी, उसे अपने घर रख ले। उसने अपना नाम राधाबाई बताया।

गोकुल ने राधाबाई को समझाया–"बहन! हम्हीं लोग बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा करते हैं। तुम को हम कहाँ से खिला सकते हैं? कोई व्यापार भी करना चाहे तो हमारे पास पर्याप्त धन भी नहीं है। अलावा इसके हम सिर्फ़ दो जने हैं। हमारी मदद करने के लिए किसी और की ज़रूरत ही क्या है?"

"मेरे वास्ते तुम लोगों को विशेष रूप से कुछ खर्च करने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम लोग अपने घर जो कुछ खाते हो, बस, उसी में से मुझे भी थोड़ा रूखा-सूखा खिला दो। थोड़ी-सी पूंजी से कोई अच्छा व्यापार करने में मैं तुम लोगों की मदद करूँगी।" राधाबाई ने समझाया।

"कौन-सा व्यापार है वह?" गोकुल ने कुतूहल में आकर पूछा।

सुधाकर त्रिपाठी

"यह तो आम का मौसम है। मैं सभी प्रकार के अचार बना सकती हूँ। आम का अचार बनाने में ज़्यादा पूंजी की भी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। तुम लोग अच्छी तरह से सोच लो।" राधाबाई ने सुझाया।

गोकुल को यह सुझाव अच्छा लगा। वह राधाबाई के सुझाव के अनुसार अचार के लिए आवश्यक सामग्री खरीद लाया। राधाबाई ने आम का अचार तैयार किया। अचार बनाने में वह बड़ी ही सिद्धहस्त थी।

गोकुल ने शीशियों में अचार भर दिया। ठेले में भरकर "राधाबाई का अचार! राधाबाई का अचार" चिल्लाते गली-गली घूमते बेचने लगा। जल्द ही सारी शीशियाँ बिक गईं। कारण यह था, जिन लोगों ने अचार खरीदा, उन्हें वह बहुत पसंद आया और वे लोग सब जगह इसका प्रचार करने लगे।

आम का मौसम खतम होने तक राधाबाई ने दिन-रात मेहनत करके अचार बनाया। लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। गोकुल को अच्छा नफ़ा हुआ।

आम का मौसम खतम होने पर राधाबाई चुप न रही। उसने नींबू, इमली और आवले के अचार बनाये। 'राधाबाई का अचार' चिल्लाते गोकुलदास ने बड़े ही उत्साह के साथ बेचा।

साल भर में गोकुल के अचार का व्यवसाय खूब फैल गया। उसने तब अचार की दूकान खोल दी। दूकान भर के

सारे खानों में अचार की शीशियाँ भरकर रखी गयीं। सब शीशियों पर चिट लगाकर उन पर बड़े अक्षरों में "राधाबाई का अचार" लिखा गया। अचार की बड़ी माँग आई। राधाबाई के नाम की धूम मच गई।

राधाबाई का नाम फैलते देख गोकुल की पत्नी सहन न कर पाई। उसने अपने पति को सलाह दी—"व्यापार तो तुम्हारा है, पूंजी भी तुम्हारी ही है, बीच में राधाबाई का नाम किसलिए? तुम 'गोकुल का अचार' नाम से क्यों नहीं बेच देते?"

गोकुल अपनी पत्नी की सलाह का विरोध न कर पाया। उसने अपनी दूकान की सभी शीशियों पर से पुराने चिट हटाकर नये चिटों पर "गोकुल का अचार" लिखकर चिपका दिया। फिर क्या था, गोकुल का व्यापार इस तरह ठप्प हो गया, मानो उसे कोई शाप लग गया हो! जो लोग राधाबाई के अचार खरीदने आये, उन लोगों ने गोकुल के अचार खरीदने में कोई उत्साह नहीं दिखाया। गोकुल ने सब को कई तरह से समझाने की कोशिश की कि वास्तव में ये राधाबाई के ही अचार हैं, सिर्फ़ नाम बदल गया है, मगर कोई फ़ायदा न रहा।

गोकुल के यह समझते देर न लगी कि उसकी पत्नी ने मूर्खतापूर्ण सलाह दी है, तब उसने अचार की शीशियों पर फिर से चिट बदलकर "राधाबाई का अचार" लिख दिया। थोड़े ही दिनों में फिर से उसका व्यापार खूब चमका।

व्यापार दिन ब दिन बढ़ता गया। इस बीच राधाबाई का देहांत हो गया। गोकुल यह सोचकर सर पीटने लगा कि फिर से उसका व्यापार ठप्प हो जाएगा, पर उसकी पत्नी ने समझाया—"राधाबाई मर गई तो क्या हुआ? मैंने तो राधाबाई से सब तरह के अचार बनाने के तरीके जो सीख लिये हैं।"

इस बार गोकुल की पत्नी की बात सौ फ़ी सदी सच निकली।

भूख

गंगाराम ईश्वरदास का विश्वासपात्र नौकर था। वह ईश्वरदास का हर काम कर देता था। मगर उसकी भूख बड़ी भयंकर थी, जितना भी खिलाओ, उसका पेट भरता न था। इसलिए वह ईश्वरदास के घर में ही नहीं बल्कि खाना खिलानेवाले हर घर में चाकरी करता था। यह बात ईश्वरदास को अच्छी न लगी। उसने सोचा कि गंगाराम की भूख मिटा दे तो वह लाचार होकर उसी के घर पर पड़ा रहेगा। फिर क्या था, एक साधू के पास तात्कालिक रूप से उसकी भूख मिटाने का उपाय पूछा। साधू ने कोई चूरन दिया। उसे पानी में घोलकर ईश्वरदास ने गंगाराम को पिलाया।

बस, उस दिन से गंगाराम ने काम पर जाने से बंद किया। क्योंकि भूख न लगे तो उसे खाने की जरूरत न थी। खाने की जरूरत न हो तो अब काम ही क्यों करे? ईश्वरदास की आँखें खुल गईं। वह साधू के पास गंगाराम को भूख लगनेवाली दवा लाने दौड़ पड़ा।
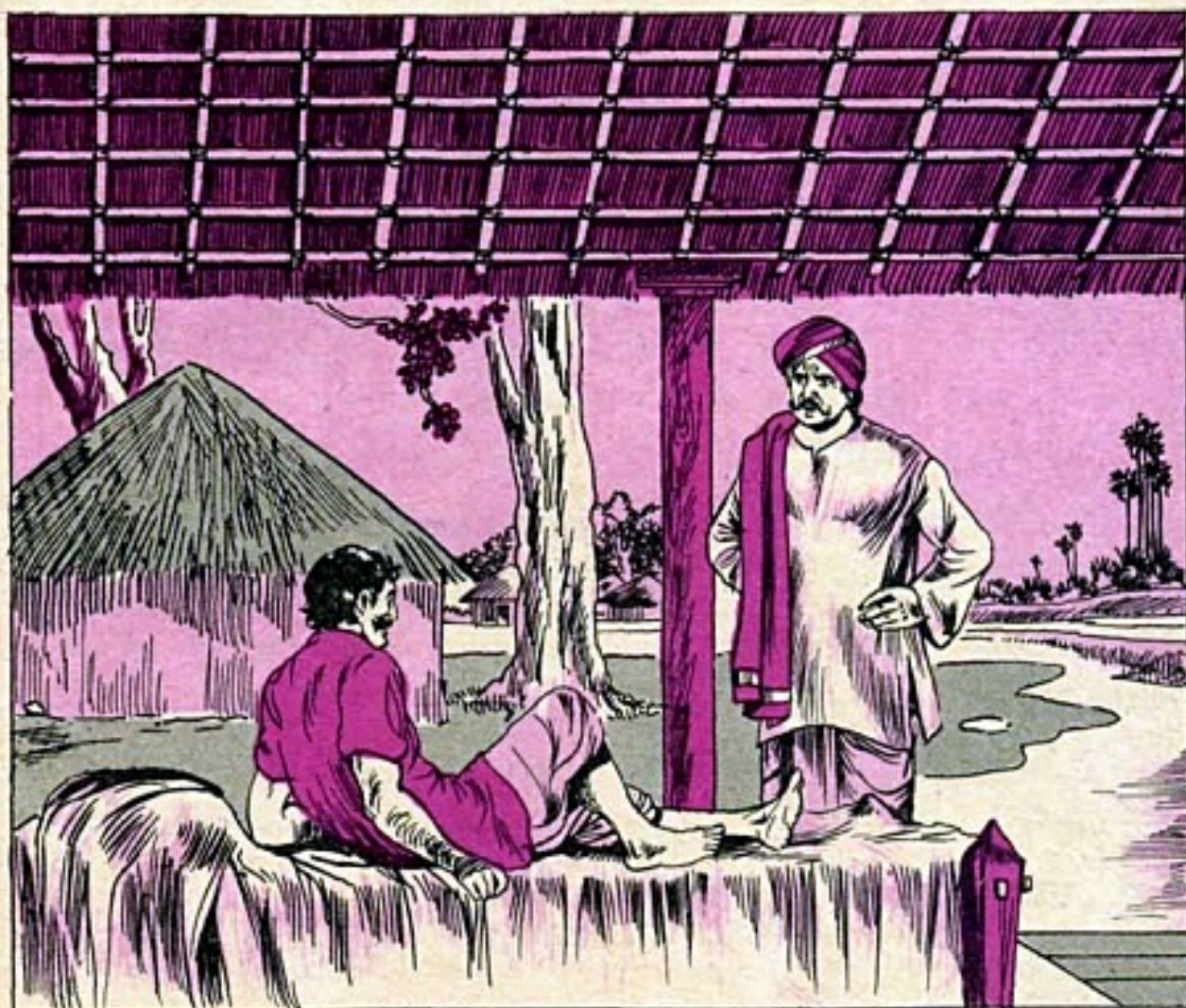
रोग-निदान

राजशेखर का जन्म एक अच्छे खानदान में हुआ था। वह अचानक अपने माँ-बाप के साथ जमीन-जायदाद भी खो बैठा। इस पर वह तक्षशिला नगर में पहुँचा। एक प्रसिद्ध आचार्य के यहाँ वैद्यविद्या सीख ली, रुद्रपुर नामक एक छोटे से शहर में जाकर अपना पेशा शुरू किया। अनतिकाल में ही उसका नाम चारों ओर फैल गया। रामशर्मा नामक एक युवक राजशेखर का शिष्य बनकर उसके यहाँ वैद्य शिक्षा सीखने लगा।

एक दिन कुलशेखर नामक गृहस्थ अपनी पुत्री मोहिनी को लेकर राजशेखर के घर पहुँचा। उसने अपनी पुत्री के रोग का निदान करने की प्रार्थना की। मोहिनी बड़ी रूपवती थी। उसका पिता कुलशेखर मोहिनी का विवाह करना चाहता था, तभी मोहिनी के पैर पर दाग निकल आये। कुलशेखर घबरा गया और वह अपनी बेटी का इलाज कराने के लिए राजशेखर के घर पहुँचा।

राजशेखर ने मोहिनी की जांच करके बताया कि उसे कोढ़ की बीमारी हो गई है, मगर प्रारंभिक दशा में है। यह बात मालूम होने पर कुलशेखर यह सोचकर घबड़ाने लगा कि उस बीमारी का रहस्य खुलने पर मोहिनी के साथ विवाह करने को कोई तैयार न होगा।

इस पर राजशेखर ने कुलशेखर को हिम्मत बंधाकर समझाया—"यह बात हम दोनों तक सीमित रहने दीजिए! आप भी मोहिनी या अन्य लोगों पर भी यह रहस्य प्रकट न होने दीजिएगा। दो साल तक लगातार दवा खाने से बीमारी दूर होगी। इसके बाद आप निस्संकोच अपनी कन्या की शादी कर सकते हैं!"

कृष्णमोहन गुप्त

राजशेखर मोहिनी को जो दवाइयाँ देता था, उन्हें एक अलग पेटी में रखकर उस पर ताला लगाया, सब की आँख बचाकर मोहिनी का इलाज करने लगा। मोहिनी धीरे-धीरे चंगी होने लगी। वह जिस बीमारी का इलाज पाती थी, यह बात सिर्फ़ राजशेखर और कुलशेखर ही जानते थे।

रामशर्मा की समझ में न आया कि मोहिनी आज तक किस बीमारी का इलाज पाती आ रही है, मोहिनी के प्रति उसके विशेष आकर्षण का कारण यह था कि वह हृदय पूर्वक उसके साथ विवाह करने की इच्छा रखता था। मगर यह बात प्रकट करने का उसमें साहस न था। क्यों कि समाज में कुलशेखर का स्थान कहीं ऊँचा था। रामशर्मा का उस स्तर तक उठना असंभव था। मगर किसी भी उपाय से कुलशेखर की प्रतिष्ठा में कलंक लगा सकेगा तो मोहिनी को वह अपनी बना सकता है।

मगर रामशर्मा के देखते-देखते एक बड़े परिवार के युवक के साथ मोहिनी का रिश्ता कायम हुआ। मुहूर्त भी निश्चित किया गया। ऐसी हालत में अचानक रामशर्मा को मोहिनी की बीमारी के रहस्य का पता चल गया। एक दिन राजशेखर किसी रोगी को देखने जाते-जाते उस जल्दबाजी में मोहिनी की दवाइयों की पेटी पर ताला लगाना भूल गया। रामशर्मा ने वह पेटी खोलकर दवाइयों की जांच की और समझ गया कि मोहिनी कोढ की बीमारी का इलाज पा रही है। रामशर्मा यह सोचकर ईर्ष्या से भर उठा कि किसी भी हालत में मोहिनी उसकी नहीं बन सकती। इसलिए उसके रिश्ते को बिगाड़कर उसे ज़िंदगी भर अविवाहित बनाये रखना है। फिर क्या था, उसने सारे गाँव में मोहिनी की बीमारी का रहस्य खोल दिया। एक तो रामशर्मा तो वैद्य का शिष्य था, मोहिनी की व्याधि का समाचार आज तक गुप्त रखा गया

था। इस कारण गाँववालों ने रामशर्मा की बात पर यक़ीन किया।

इस कारण मोहिनी की शादी का रिश्ता टूट गया। कुलशेखर के मन में पहले इस बात का संदेह हुआ कि वैद्य राजशेखर ने ही मोहिनी की बीमारी का रहस्य रामशर्मा को बताया होगा, यों सोचकर कुलशेखर ने राजशेखर की निंदा की।

राजशेखर ने शपथ लेकर बताया– "महाशय, आप की कन्या की बीमारी का रहस्य मैंने आज तक किसी पर प्रकट नहीं किया है, पर यह रहस्य मेरे शिष्य ने ही जान लिया है, इसलिए इसका दायित्व मुझ पर है। आप कृपया न्यायालय में जाकर यह फ़रियाद कीजिए कि मेरे शिष्य रामशर्मा ने आप की कन्या की बीमारी के संबंध में असत्य का प्रचार करके न केवल आप की प्रतिष्ठा में कलंक लगाया है, बल्कि उसकी शादी का रिश्ता भी तुड़वा दिया है। मैं आप की ओर से गवाह दूंगा।"

इस पर कुलशेखर ने राजशेखर के सुझाव के अनुसार रामशर्मा के प्रति फ़रियाद की। न्यायाधिकारी ने राजशेखर को बुलाकर कैफ़ियत माँगी। इस पर न्यायालय में राजशेखर ने यों गवाही दी– "मोहिनी इस वक़्त कोढ़ की बीमारी से मुक्त है, रामशर्मा ने यह बात जाने बिना लोगों को इस बात पर यक़ीन दिलाया कि वह कोढ़ की बीमारी से पीड़ित है। इसलिए उसका जो रिश्ता क़ायम हो गया है, उसके बिगाड़ने की कोई संभावना नहीं हो सकती। यदि वर की जगह मैं होता, तो निश्चय ही मैं मोहिनी के साथ विवाह कर लेता।"

इसके बाद रामशर्मा उस गाँव के लोगों को अपना चेहरा दिखा न पाया और उस गाँव को छोड़ कहीं चला गया। तब कुलशेखर ने टूटे हुए रिश्ते को जोड़ने का प्रयास किये बिना मोहिनी को भयंकर व्याधि से मुक्त कर उसके साथ विवाह करने के लिए तैयार हुए राजशेखर के साथ ही मोहिनी का विवाह किया।

देवी भागवत

सुदर्शन के साथ विवाह करने का अपना निर्णय बदलने की शशिकला को उसकी माता ने सलाह दी, इस पर शशिकला ने यों बताया :

"माँ, सुदर्शन चाहे जंगल में हो या नगर में, उनके पास धन संपत्ति के न होने से क्या हुआ? नवों निधियों के होने मात्र से भी क्या अंतर पड़ता है? मेरा मन उनको छोड़ दूसरे की कामना नहीं करता। ललाट की रेखा को ब्रह्मा भी मिटा नहीं सकते। प्रसन्नतापूर्वक पति की सेवा करनेवाली नारी को स्वर्ग, मोक्ष आदि समस्त प्राप्त होंगे। मेरे भविष्य का निर्णय महादेवी ने ही किया है। मैं सुदर्शन को ही चाहती हूँ।"

इस पर शशिकला का उत्तर उसकी माता ने अपने पति को सुनाया।

स्वयंवर का समय समीप आया था, मगर सुदर्शन नहीं आया। शशिकला ने अपने एक हितैषी ब्राह्मण को गुप्त रूप से बुला भेजा और बताया—"महाशय, हमारे पिता की आँख बचाकर आप भरद्वाज आश्रम को जाइये, सुदर्शन से मिलकर मेरी तरफ़ से यों सुनाइये—"महादेवी ने मुझे सुदर्शन के साथ विवाह करने की सलाह दी है। मेरा स्वयंवर होने जा रहा है। सारे देशों के राजा आ गये हैं। मेरा मन तो आप पर लगा है। मगर सुदर्शन, आप नहीं आये; मैं आप को छोड़ किसी अन्य का वरण न करूँगी।

९. शशिकला का स्वयंवर

जाओगे? युधाजित तो तुम्हारे प्राणों के लिए काल बने हुए हैं। मेरी बात सुनो।"

सुदर्शन ने समझाया—"माँ, मैं देवीजी के आदेश का पालन करने जा रहा हूँ। ऐसी हालत में मेरा अहित कैसे होगा? तुम क्षत्रिय नारी हो, जो होना है, सो होकर ही रहेगा।" यों अपनी माँ को हिम्मत बंधाकर निषाध राजा के द्वारा प्राप्त रथ पर सवार हो रवाना होने को हुआ।

मनोरमा ने सुदर्शन को आशीर्वाद देकर कहा—"बेटा, तुम्हें छोड़कर मैं पल भर भी नहीं रह सकती। मुझे भी तुम अपने साथ ले जाओ।"

सुदर्शन सैरंध्री के साथ अपनी माँ को रथ पर बिठाकर काशी नगर पहुँचा। राजा सुबाहू ने सुदर्शन की आगवानी करके उसके ठहरने का प्रबंध किया और सेवा के लिए परिचारिकाओं को नियुक्त किया।

युधाजित अपने दौहित्र के साथ स्वयंवर में पहले ही आ पहुँचा था। युधाजित के साथ अन्य राजाओं ने भी सुदर्शन को देख आपस में चर्चा की—"उफ़! इतने सारे महाराजाओं के बीच सुदर्शन भी स्वयंवर में आ गया है। शायद उसने यह सपना देखा होगा कि इतने सारे राजाओं को छोड़ उसी के साथ राजकुमारी विवाह

यदि आप के साथ विवाह करना संभव न हुआ तो आग में कूदकर प्राण त्याग दूंगी। देवी की कृपा से हमें समस्त प्रकार के शुभ प्राप्त होंगे। जगन्माता पर विश्वास करके आप जरूर मुझे ग्रहण कीजिए।"

ब्राह्मण शशिकला के संदेश के साथ दक्षिणा भी लेकर भरद्वाज के आश्रम में गया। सुदर्शन से मिलकर शशिकला का संदेशा सुनाया। फिर क्या था, सुदर्शन स्वयंवर के लिए चल पड़ा।

यह समाचार मिलते ही मनोरमा का कलेजा कांप उठा। वह दुख में डूबकर यों बोली—"इतने सारे राजा जहाँ पर एकत्रित हैं, वहाँ पर क्या तुम अकेले ही

करेगी। फिर भी कुछ बता नहीं सकते। न मालूम क्या होने जा रहा है!"

ये बातें सुन युधाजित बोला—"आप सब देखते रह जाइये! मैं इस सुदर्शन का वध कर डालूंगा।" इस पर केरल के राजा ने युधाजित को समझाया—"यह तो इच्छा स्वयंवर है। वधू अपनी पसंद के युवक को पति के रूप में स्वीकार करेगी। साथ ही आप ने अन्यायपूर्वक सुदर्शन के राज्य पर अधिकार करके अपने दौहित्र का राज्याभिषेक किया। हो सकता है कि आप के दौहित्र को ही राजकुमारी वरण करे। यह भी मत भूलिए कि सुदर्शन ही आप को पराजित करें। चाहे जो हो, धर्म और न्याय की विजय होगी। सत्य ही स्थापित होगा। आप अन्याय करने पर तुल गये हैं। राजकुमारी आखिर एक ही को वर सकती है। बाक़ी लोगों की ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।"

इस पर युधाजित ने कहा—"आप के कथनानुसार यह इच्छा स्वयंवर है। हमें इस बात की बड़ी प्रसन्नता होगी कि जो राजा यहाँ पर आये हुए हैं, उनमें से सबसे योग्य राजा को राजकुमारी चुने। लेकिन इतने सारे राजाओं के होते हुए यदि राज कुमारी किसी अनाथ युवक का वरण करे तो क्या बाक़ी सब को देखते रहना होगा?

ब्राह्मणों का बल वेद है, क्षत्रियों की शक्ति धनुष है। क्षत्रियों के विवाह का शुल्क भी बल है। यह वधू बलवान की संपत्ति है।"

इस पर कुछ लोगों ने सुझाया—"आप की बातें सही हैं, अगर वह शक्ति सुदर्शन की है तो उसे ही लेने दीजिए।"

इसके बाद इस बात को लेकर राजाओं के बीच वाद-विवाद बढ़ता गया। अंत में सबने मिलकर सुबाहू को बुला भेजा, सुबाहू ने सब का तर्क सुनकर अपना विचार यों बताया—"मान्य राजाओ, मेरी पुत्री हृदयपूर्वक सुदर्शन को वरना चाहती है। जैसा होना है, वैसा ही होगा। इसलिए ये तर्क-वितर्क ही क्यों?"

सुबाहू का विचार मालूम हो गया था, इसलिए सभी राजाओं ने सुदर्शन को बुलवाकर समझाया—"सुदर्शन! तुम अकेले आये हुए हो। सेनाओं के साथ आये हुए अनेक राजकुमार युद्ध करके ही सही शशिकला के साथ विवाह करने का विचार रखते हैं। तुम कर ही क्या सकते हो। तुम्हारा छोटा भाई शत्रुजित अत्यंत शक्तिशाली है। योग्य और रूपवान भी है। उसकी मदद के लिए विशेष रूप से तुम्हारा वध करने के लिए उसके मातामह आये हुए हैं। क्या तुमने कभी सोचा भी है कि इस स्वयंवर में आना तुम्हारी कैसी भूल थी? हम नहीं जानते, तुम्हें किसने निमंत्रण दिया और तुम किसलिए आये हो? फिर भी जो बात है, हमने स्पष्ट बताई, इसके बाद तुम्हारी जैसी इच्छा।"

राजाओं का सुझाव सुनकर सुदर्शन ने कहा—"राजाओ, आप की इस कृपा के लिए मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ। पर इतनी दूर आकर डरने से क्या फ़ायदा? यह सारा दायित्व तो मुझे यहाँ पर भेजनेवाली महादेवी का है। महादेवी क्या मेरी सहायता किये बिना ही मुझे शत्रुओं के हाथों में सौंप देंगी? मेरे अपने कोई शत्रु व मित्र नहीं हैं। सर्वत्र मुझे महादेवी ही दिखाई दे रही हैं। उन्हीं के आदेश पर मैं इस स्वयंवर में आया हुआ हूँ। अगर कोई मुझ पर नाराज़ हो जाते हैं, वे देवी के शत्रु बन जाते हैं। आप कहेंगे कि मेरे साथ सेना नहीं है। मुझे सेना की कोई आवश्यकता भी नहीं है। जो महादेवी दुर्बल व्यक्ति तक को बल और संपदा देती हैं, वही देवी मेरी शक्ति हैं। अन्य शक्तियों के साथ मेरा कोई वास्ता नहीं है। शक्ति और अशक्तियाँ नामक कोई चीज़ ही नहीं होतीं, जो महाशक्ति के अनुग्रह के पात्र होते हैं, वे ही शक्तिवान होते हैं। जिन्हें देवीजी का अनुग्रह प्राप्त नहीं होता, वे चाहे ब्रह्मादि भी क्यों न हो, शक्तिहीन ही होते हैं। मेरी चाहे

विजय हो, या पराजय, यह सब उसी जगदंबा की है, मेरी नहीं! इसलिए आप लोग कृपया मेरी कोई चिंता न करें।"

ये बातें सुन थोड़े राजा खुश हो बोले- "भाई, तुम्हारी बातें बिलकुल सत्य हैं। तुम पुण्यात्मा हो! मगर युधाजित तुम्हारे साथ बदला लेना चाहते हैं, यह बात तुम भूलो मत।"

इस पर सुदर्शन ने उन्हें समझाया- "महाराजाओ, आप लोगों का मुझ पर अपार अनुग्रह है, इसलिए मुझे आप ने यों समझाया; इस सृष्टि के भीतर मृत्यु किसी के अधीन में नहीं है। प्रत्येक प्राणी कर्म के अधीन होता है। उसे स्वेच्छा नहीं है, केवल काल, कर्म और स्वभाव ही सब बातों के निर्णायक होते हैं। समय न आया तो भगवान भी हमें मार नहीं सकते। यमराज भी केवल निमित्त मात्र हैं। मेरे पिता का वध करनेवाला सिंह और मेरे नाना का वध करनेवाले युधाजित भी निमित्त मात्र हैं। अगर मौत होनी ही है तो उसे कौन बचा सकता है? मानव एक दूसरे की रक्षा ही क्या कर सकता है? ईश्वर का अनुग्रह रहा, तो एक हज़ार वर्ष जी सकते हैं! मैं ईश्वर पर भरोसा करके यहाँ पर आया हुआ हूँ। मेरी सहायता के रूप में रहनेवाली सेना भी ईश्वर ही है। अगर मेरा कोई शत्रु हो तो वह भी ईश्वर ही है।"

ये बातें सुन सब लोग प्रसन्न हो उठे। सुदर्शन अपने निवास को लौट गया।

दूसरे दिन स्वयंवर निश्चित था! सुबाहू का निमंत्रण पाकर आये हुए सभी राजा सभा भवन में उपस्थित हो शशिकला की राह देख रहे थे। कुछ लोग यह सोचकर विस्मित हो रहे थे कि आख़िर शशिकला किसे वरण करनेवाली है। कुछ लोग निश्चित रूप से यह बता रहे थे कि शशिकला सुदर्शन को छोड़ किसी अन्य को वरण न करेगी। कुछ और लोग बता रहे थे कि ऐसी हालत में युद्ध अनिवार्य है।

मंगल वाद्य बज रहे थे। शशिकला ने स्नान करके अपने को अलंकृत किया, रेशमी वस्त्र धारण कर हाथ में पुष्पमाला ले अपनी सखियों के साथ आ पहुँची। मगर वह एक खंभे के पास रुक गई, सिर झुकाकर कुछ सोचते हुए से खड़ी रह गई।

राजा सुबाहू ने अपनी पुत्री को देख मुस्कुराते हुए कहा—"बेटी, देखो! आज तुम्हारे साथ विवाह करने के लिए बड़े-बड़े रूपवान और यशस्वी राजकुमार आये हुए हैं। सब तरह से तुम्हारे लिए जो योग्य हो, उसी को तुम चुन लो।"

इस पर शशिकला बोली—"पिताजी, ये सब कामी, उन्मत्त, दुष्ट और पापी हैं। साध्वी नारी को इनके सामने नहीं आना चाहिए। एक साध्वी को चाहिए कि वह अपने पति को छोड़ अन्य लोगों की ओर आँख तक उठाकर न देखे। वरमाला लेकर अनेक व्यक्तियों के बीच आनेवाली युवती क्या वेश्या नहीं कहलायेगी? पिताजी, क्या इन राजाओं के बीच आने के लिए मैं वेश्या थोड़े ही हूँ? मैं तो सुदर्शन की संपत्ति हूँ। मुझे अन्य लोगों को देखने की आवश्यकता ही क्या है? मुझे स्वयं अपने को अपमानित क्यों करना है? चाहे दुनिया क्यों न पलट जाय, मैं अन्य व्यक्ति को वर नहीं सकती। इसलिए आप आज या कल सुदर्शन के साथ ही मेरा विवाह कर दीजिए।"

शशिकला की बातें सुन राजा सुबाहू आफ़त में फंस गये। स्वयंवर में आये हुए सभी राजकुमार महान शक्तिशाली थे। उनकी संख्या भी काफ़ी बड़ी थी। उनसे निवेदन करने पर वे आसानी से लौटकर नहीं जायेंगे। अगर उसे किसी का सहारा हो तो केवल राजकुमारी के द्वारा वर लिये गये सुदर्शन का ही है। अन्य राजाओं के हाथों में उसकी बेटी उसके लिए मौत बनकर बैठ गई है।

यों विचार कर राजा सुबाहू अत्यंत विनयपूर्वक राजाओं के बीच पहुँचे और
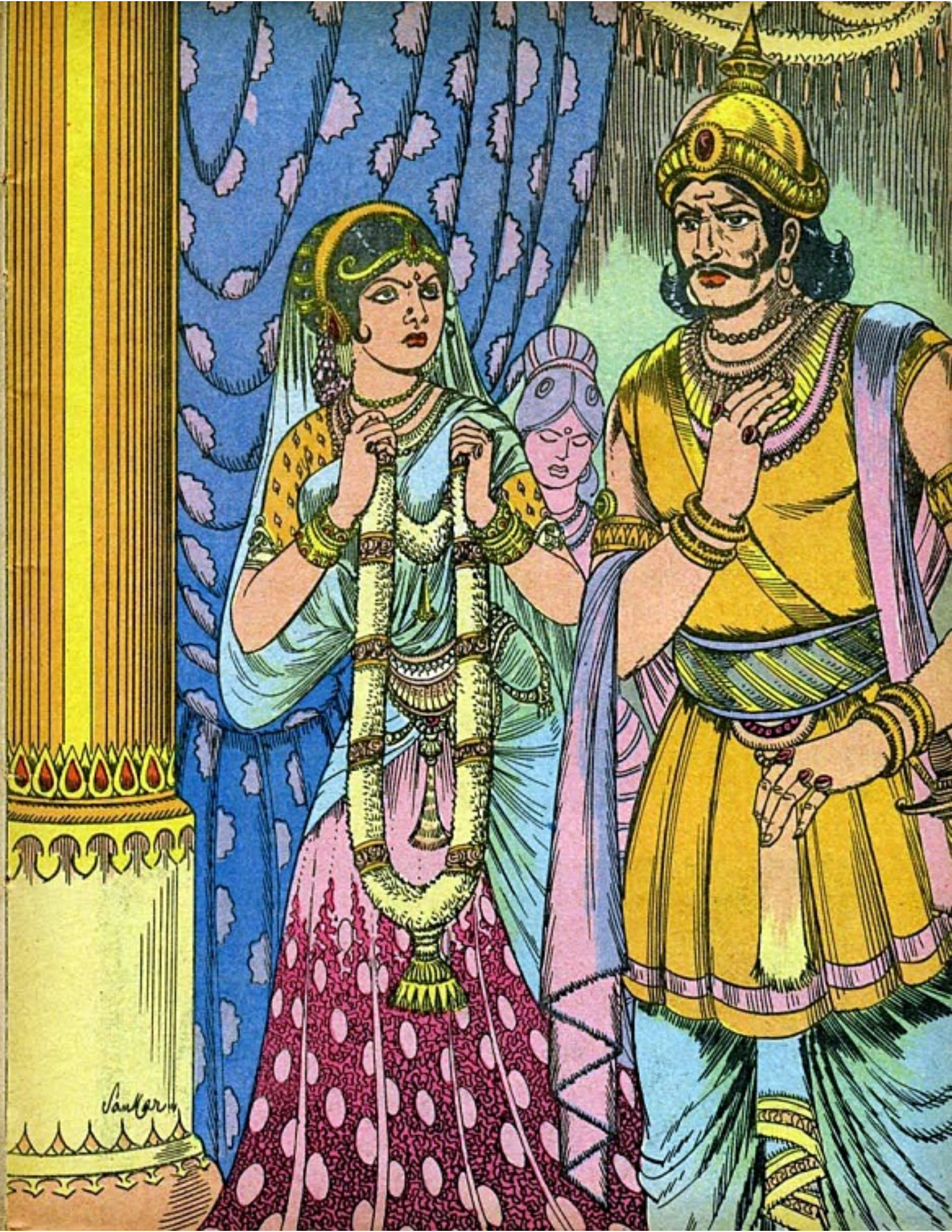
हाथ जोड़कर बोले–"हे महाराजाओ, महात्माओ, दयावानो! आप लोगों से मेरी सविनय प्रार्थना है! आप सब मेरे इस अपराध को क्षमा कर मुझ पर अनुग्रह करके मेरे हाथों से पुरस्कार लेकर कृपया अपने अपने नगरों को लौट जाइये। मैंने अपनी पुत्री को अनेक प्रकार से समझाया, पर वह सुदर्शन को छोड़ अन्य राजाओं को वरने से इनकार कर रही है। मेरी वजह से अकारण ही आप सब को कष्ट पहुँचा है। अगर आप मेरा अपराध क्षमा करें तो आप लोगों को मैं अपने हाथी, घोड़े, गाँव, दास-दासियाँ, रत्न, धन, मकान, बाग-बगीचे, यहाँ तक अपना सारा राज्य सौंप देता हूँ।"

सुबाहु की यह प्रार्थना सुनकर किसी भी राजा ने कोई उत्तर नहीं दिया। पर युधाजित क्रोध के मारे दांत पीसते बोला–"यह तुम क्या कहते हो? मूर्खतावश तुमने अपनी पुत्री का स्वयंवर सुदर्शन के साथ करने का निश्चय किया और यहाँ पर आये हुए महान राजाओं को भगा न सकने की हालत में विनय प्रदर्शित करते हो? क्या तुमने हम सब को मूर्ख समझा? यदि तुम्हारे मन में पहले ही संदेह था तो तुमने हम सब को निमंत्रित करने की बेवकूफ़ी क्यों की? अब तुम्हारे रोने से फ़ायदा ही क्या है? देखते रह जाओ, तुम्हारा घमण्ड तोड़कर सुदर्शन का अंत करके मैं अपने दौहित्र के साथ तुम्हारी बेटी का विवाह कर देता हूँ। सुदर्शन आखिर मेरे सामने किस खेत की मूली है? ये सब राजा भी एक हो जायें, तब भी मैं पल भर में इन सब को पराजित करूँगा। इसके पूर्व एक बार भरद्वाज मुनि के आश्रय में सुदर्शन को देख मैंने उसके प्राण नहीं लिये। आज मैं उसे किसी भी हालत में छोड़ नहीं सकता। तुम अपनी पुत्री का विवाह मेरे दौहित्र के साथ करके अपने और अपने राज्य को बचा लो। वरना तुम अपनी पुत्री को समझाओ कि वह राज सभा में प्रवेश करके अन्य किसी को वर ले।"

आलसी की खेती

नारायणवर्मा बहुत बड़ा आलसी था। पर उसे अपनी समर्थता पर अपार विश्वास था। उसका पिता साल भर कड़ी मेहनत करता था, इसे देखकर भी नारायण चौपाल के यहाँ पहुँचकर डींगें मारता था।

अगर कोई बुज़ुर्ग उसे डांट देता–"अरे, तुम भी और जवान लड़कों की तरह खेती में अपने बाप की मदद क्यों नहीं करते, जिससे तुम खेतीबाड़ी करवाना भी सीख जाओगे और तुम्हारे बाप को थोड़ा-बहुत आराम भी मिल जाएगा।" नारायण खीजकर यही जवाब देता–"काकाजी! खेतीबाड़ी के पीछे साल भर मेहनत करने की क्या ज़रूरत है? अगर मैं खेतीबाड़ी कराना चाहूँ तो, घर बैठे-बैठे आप लोगों से कहीं कम खर्च में ज्यादा फ़सल पैदा करा सकता हूँ, जानते हैं?"

नारायण के पिता ने सोचा कि उसके घर पर रहते उसके बेटे की आलसी दूर न होगी। यों विचार कर उसने खेतीबाड़ी की जिम्मेदारी नारायण के हाथ सौंप दी। साल भर तीर्थाटन पर जाने की बात बताकर घर से चल पड़ा।

नारायण को अब यह मौक़ा हाथ लगा कि वह किस तरह बड़ी आसानी से खेतीबाड़ी करा सकता है। इतने में रोपाई का वक़्त आ पड़ा। उसने सोचा कि इतने छोटे काम पर उसे ख़ुद खेत पर जाने की क्या ज़रूरत है? यों सोचकर वह अपने पड़ोसी रामदास के घर पहुँचा और बोला–"देखो मामाजी, आप तो अपने खेत में बुवाई करवा ही रहे हैं। मेरे भी खेत में थोड़ा बुवाई क्यों न करवा देते? बीज लेकर हमारे नौकर तुम्हारे साथ चलेगा। सुना है, तुम्हारे हाथों द्वारा बुवाई

सुधा चौधरी

कराने से अच्छी फ़सल होती है। यह बात मेरे बाबूजी बराबर कहा करते हैं।"

रामदास ने नारायण की ओर आपाद मस्तक देखकर कहा–"अच्छी बात है, बेटा! इस छोटे से काम के लिए तुम्हें परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं। तुम्हें चाहे किसी भी प्रकार की मदद की ज़रूरत हो तो बता दो, मैं ज़रूर करूँगा।"

इस प्रकार नारायण को बुवाई के काम से छुट्टी मिल गई। वह अपनी अक़्लमंदी पर मन ही मन खुश हुआ। चकलाई के वक़्त भी नारायण को खेत की ओर पटकने की नौबत नहीं आई, क्योंकि यह काम भी रामदास खुद कर बैठा। निराई के वक़्त नारायण का नौकर मजदूरों को लेकर खेत पर पहुँचा और यह काम भी पूरा किया।

एक दिन सवेरे चिड़ीमार ने प्रवेश करके नारायण को प्रणाम किया और बोला–"सरकार! हर साल तुम्हारे खेत के चूहे मैं ही पकड़ता हूँ। क्या कल जाकर तुम्हारे खेत के सारे चूहों को पकड़कर मार डालूं?"

"सुनो, तुम हर चूहे के पीछे कितनी मजूरी लेते हो?" नारायण ने पूछा।

"सब लोग हर चूहे के पीछे चवन्नी देते हैं वही तुम भी दो।" चिड़िमार ने कहा।

"मैं हर चूहे के लिए बीस पैसे दूंगा, समझें?" नारायण ने कहा।

फिर क्या था, दूसरे दिन चिड़ीमार बासठ मरे हुए चूहे उठा लाया, नारायण को दिखाकर हर चूहे के पीछे बीस पैसे के हिसाब से मजूरी ले गया। चलते-चलते उसने बताया कि वह दाँवने के वक़्त आएगा।

सब लोग हर चूहे के पीछे जब चवन्नी मजूरी देते हैं, तो उसने बीस ही पैसे देकर चूहों से पिंड़ छुड़ा लिया है। इस तरह हर चूहे के पीछे पाँच पैसे बचाने की अपनी होशियारी पर वह खुश हो गया।

एक दिन नारायण चौपाल के यहाँ से घर लौट रहा था, तब कनकदास नामक

एक किसान ने उसे समझाया–"देखो बेटा, तुम्हारे खेत में फ़सल की बीमारी हो गई है! एक बार दवा क्यों न छिड़कवा देते?"

नारायण ने झट जवाब दिया–"आप जब अपने खेत में दवाई छिड़कवा देते हैं, मैं भी उसी वक़्त करा दूंगा।"

"मैं कल सवेरे ही दवा छिड़कवाने जा रहा हूँ। चाहे तो तुम भी मेरे साथ चलो।" कनकदास ने कहा।

नारायण ने थोड़ा संकोच का अनुभव करते हुए कहा–"कनकदासजी! मेहर्बानी करके मेरी थोड़ी मदद कर दीजिए। कल सवेरे तो मुझे कोई जरूरी काम आ पड़ा है। अगर आप बुरा न माने तो मेरे भी खेत में दवा छिड़कवा दीजिए। मैं अभी उसका खर्चा दे देता हूँ।"

कनकदास खुशी-खुशी राजी हो गया और रुपये लेकर चला गया।

कटाई आदि का काम नारायण के खेत पर गये बिना ही आसानी से हो गया। नारायण की समझ में न आया कि बस, इस प्रकार खेतीबाड़ी कराने के पीछे लोग क्यों हैरान हो जाते हैं? उसके मन में उसकी इस सामर्थ्य पर बड़ा विश्वास जम गया।

दांवने के वक़्त रामदास, कनकदास और चिड़ीमार ने भी नारायण की मदद देने की बात कही। नारायण ने सोचा कि दांवने के वक़्त भी खेत पर न जाना उचित न होगा। यों विचार कर अपने आलसीपन को त्याग सवेरे ही सवेरे उठ बैठा और खेत की ओर चल पड़ा।
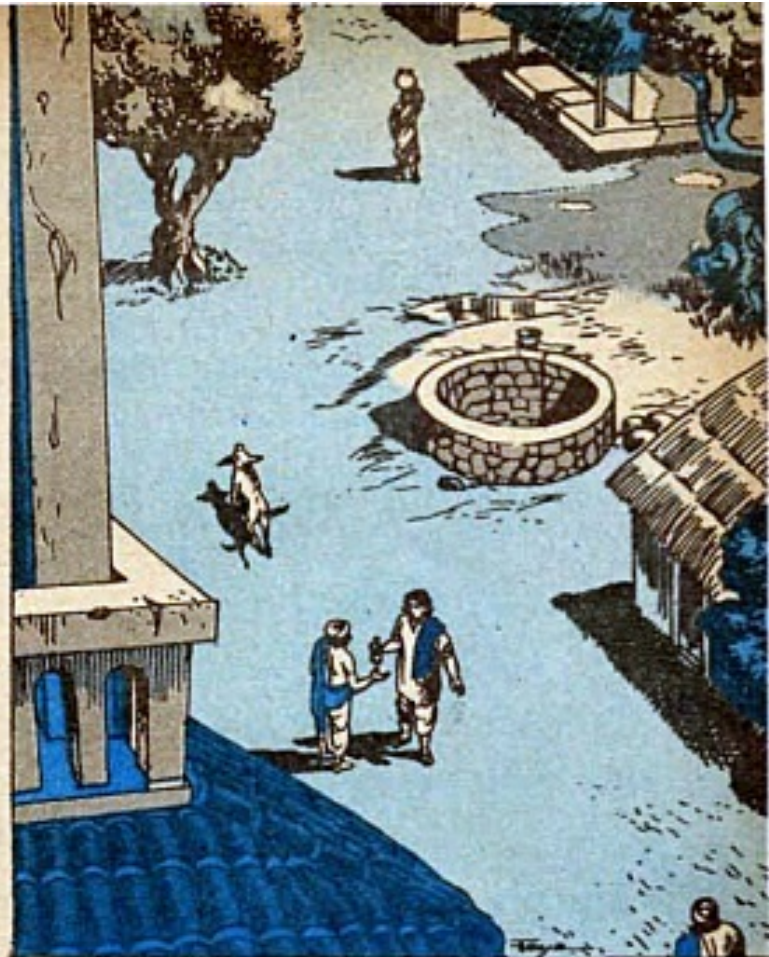
सब के खतों में धुंधले अंधकार के वक़्त ही दांवने का काम शुरू हुआ। पर नारायण ने अपने खेत पर पहुँचकर देखा कि उसके खेत का दांवने का काम अभी तक शुरू नहीं किया गया है, सब लोग बैठे-बैठे बतिया रहे हैं। नारायण उनकी आँख बचाकर छिपकर बैठ गया और उनकी बातचीत सुनने लगा।

"वाह, नारायण को तुमने खूब फंसा लिया है। उसकी मेहर्बानी से इस साल

बुवाई का खर्च व मेहनत से भी में बच रहा। रोपाई आदि का सारा खर्च व मजूरी भी उसी के हाथ से वसूल किया। अच्छा, यह बताओ, तुम्हारे हाथ कितने रुपये लगे?" यों रामदास नारायण के नौकर से पूछ रहा था।

नौकर ने मुस्कुराते हुए कहा—"मैंने जो बचाया, कोई खास ज्यादा नहीं है। दस मजदूरों को लगाकर पंद्रह लिख दिया।"

"मेरी फ़सल को जब बीमारी लगी तब दवाइयाँ खरीदने के लिए मेरे हाथ में एक कौड़ी भी न थी। उस वक्त मुझे नारायण की याद हो आई। मैंने जब उससे पूछा—"नारायण, क्या दवाइयाँ नहीं छिड़कवाओगे?" उसने यह काम कराने के लिए मेरे ही हाथ रुपये दिये। वाह, वह तो एक अव्वल दर्जे का आलसी है। उसकी कृपा से मैंने अपनी फ़सल पर दवा छिड़कवा दी है।" कनकदास ने कहा।

"सरकार! में भी अपना राज खोल दूं तो अच्छा होगा। मैंने दिन भर चार लोगों के खेतों में चूहे पकड़े तो मेरे हाथ बासठ चूहे लगे। सब के यहाँ रुपये वसूल कर आखिर नारायणजी के यहाँ पहुँचा। सारे चूहे दिखाकर बोला—"अजी, साहब! ये सारे चूहे आप ही के खेत में से पकड़ लिये गये हैं। उस भोले आदमी ने मान लिया। सब लोग एक चूहे के पीछे एक चवन्नी मजदूरी देते हैं, पर उन्होंने बीस पैसे का सौदा पटाया। यह सोचकर खुश हो गये कि प्रति चूहे के पीछे पाँच पैसे बचा लिये हैं। सच बात बता दूं कि उनके खेत में दस ही चूहे मिले हैं।" चिड़ीमार ने कहा।

"क्या अब हम लोग भी अपना काम शुरू कर दे?" रामदास ने कहा।

"जल्दी क्या है? घंटा-भर आराम करके तब शुरू करेंगे।" कनकदास ने सुझाया।

आड़ में से ये बातें सुननेवाले नारायण का कलेजा कांप उठा। दूसरे साल नारायण ने लगन के साथ खेतीबाड़ी खुद करके अपने आलसीपन को तिलांजली दी।

झगडालू पत्नी

एक गाँव में जगपति नामक एक युवक था। उसने एक लड़की के रूप-लावण्य पर मुग्ध हो उसके साथ विवाह किया। वह बड़ी झगडालू थी। उसके साथ नरक की यातनाएँ भोगकर उसने अपने दोस्त को अपनी मुसीबत बताई। दोस्त ने उसे सलाह दी कि उस गाँव में कोई एक साधू आया हुआ है। गाँव के सारे लोग उसके सामने अपनी कठिनाइयाँ बताकर उन्हें दूर कर रहे हैं। जगपति ने साधू की सेवा में पहुँचकर अपनी मुसीबतें बताई।

सारी बातें सुनकर साधू ने समझाया–"भाई साहब! मैं भी अपनी झगड़ालू पत्नी से तंग आकर साधू बनकर यों चक्कर लगा रहा हूँ। मैं भला तुम्हें क्या सलाह दे सकता हूँ?"

इसके बाद जगपति पड़ोसी गाँव में आये हुए नित्यानंद स्वामी नामक एक योगी से मिला। उसको अपना दुखड़ा सुनाया।

"बेटा! मैं जन्मजात दरिद्र हूँ। इसलिए मेरी शादी तक नहीं हुई। गृहस्थी का मुझे बिलकुल ज्ञान नहीं है। तुम्हें मैं सलाह क्या दूँ" नित्यानंद ने जवाब दिया।

जगपति चल पड़ा। वह सोचने लगा, तभी पीछे से आकर किसी ने पूछा–"बेटा, तुम्हें कैसी विपदा आ पड़ी है? बोलो, मुझे तो लोग चन्द्रभानु कहते हैं।"

जगपति ने चन्द्रभानु को अपनी विपदा सुनाई। इस पर चन्द्रभानु ने घबराकर कहा–"मैंने अपनी झगड़ालू पत्नी से तंग आकर आत्महत्या कर ली। इस वक्त मेरी पत्नी मौत की अंतिम घड़ियाँ गिन रही है। मैं यह सोचकर परेशान हूँ कि कहीं मरने के बाद मेरे पीछे न पड़े।" यों कहकर चन्द्रभानु गायब हो गया।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां सितम्बर १९७९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Gopal Shroti

★

Mohan D. Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ जुलाई १० तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियां कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मई के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : मैं चूस-चूस थक जाऊं!

द्वितीय फोटो : मैं देख-देख ललचाऊं!!

प्रेषक: कुमार अपूर्व सिंह, १४, झारखरिया, झांसी (उ. प्र.)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

हुर्रे
असोका ग्लूकोज
मिल्क बिस्कुट!
Asoka
Glucose
MILK BISCUITS
Asoka
ASOKA
GLUCOSE
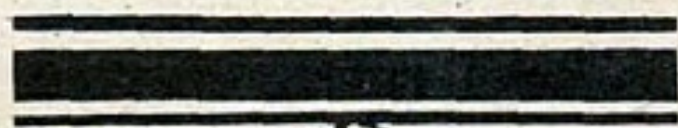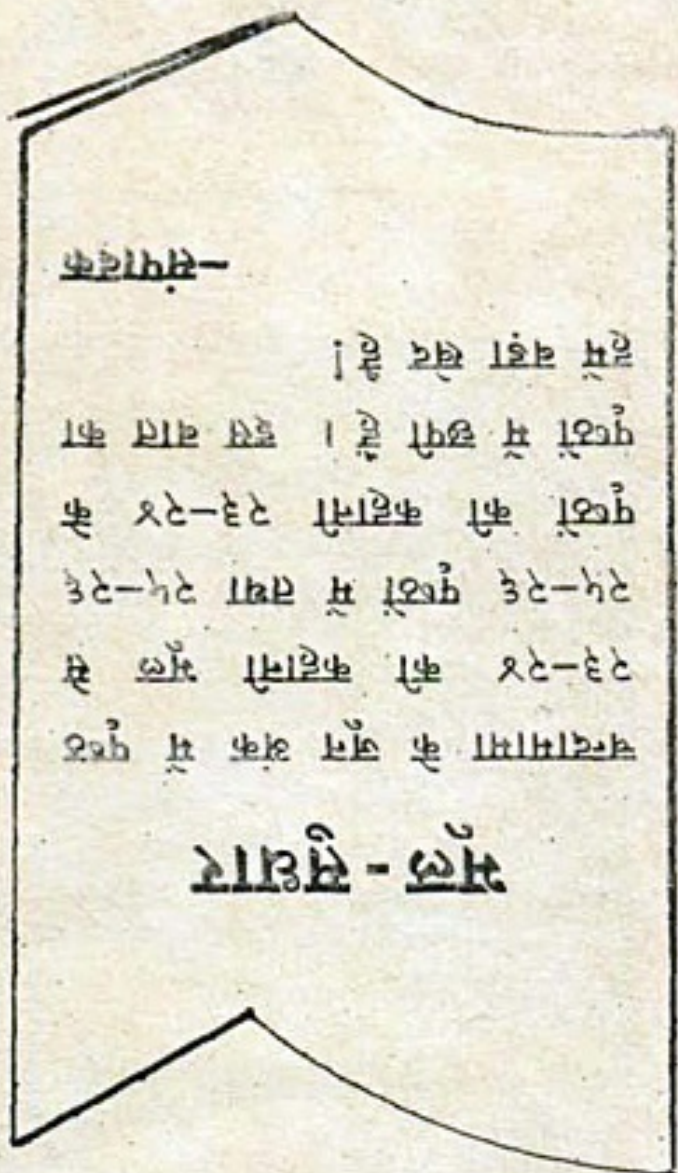
भूल - सुधार

चन्दामामा के जून अंक में पृष्ठ २३–२४ की कहानी भूल से २५–२६ पृष्ठों में तथा २५–२६ पृष्ठों की कहानी २३–२४ के पृष्ठों में छपी हैं। इस बात का हमें बड़ा खेद है!

—संपादक

चैम्पियन ३६
साइज : ९-११ १/२, १२-१ १/२, २-५
रु ३२.९५, ३६.९५, ४२.९५
बैलेरिना ४६
साइज : ९-११, १२-१, २-६
रु २५.९५, २८.९५, ३२.९५
लिलिपुट २२
साइज : ५-८, ९-११
रु १७.९५, १९.९५
स्कूल जाते Bata

Results of Chandamama—Camlin Colouring Contest No. 8 (Hindi)

1st Prize : Atub P. R. Batra, New Delhi. *2nd Prize :* Nilesh R. Jagirdar, Ujjain. *3rd Prize :* Guljari Lal, New Delhi. *Consolation Prizes :* Meera Khialdas, Ulhasnagar; Sunita Arora, New Delhi; Usha Aggarwal, Barut ; M. Ranju, Madras. Neelmani Thakur, Poona.

DADDY
MUMMY
AND...
I
"ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं।"
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना.
अपने बच्चों की गुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए.
ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
FOR SKETCHING COLOURING • SIGNING
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/९, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फान : ३२४४३२
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.
ADVERTS/WP/216/HIN/GB

नन्हें मुन्ने
प्यार चाहते, प्यार मिले तो बढ़ते जाते
PARLE
Gluco
प्यार का उपहार
पारले ग्लुको—
स्वाद में निराले
शक्ति से भरपूर
दूध, गेहूं, शक्कर और ग्लूकोज़ के
स्वाद और पौष्टिक गुणों से भरपूर.